खंड 2

समाजशास्त्र संबंधी परिप्रेक्ष्य-II

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 अर्थ और परिभाषा

5.3 व्याख्यात्मक और सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र के बीच अंतर

5.4 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की उत्पत्ति

5.4.1 मैक्स वेबर

5.5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाएँ

5.5.1 प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

5.5.1.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड का योगदान

5.5.1.2 हर्बर्ट ब्लूमर का योगदान

5.5.2 नाट्य-शास्त्र

5.5.3 दृश्य प्रपंच शास्त्र

5.5.4 जाति प्रणाली विज्ञान

5.6 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाएं

5.7 सारांश

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 संदर्भ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित बातों के संदर्भ करने में सक्षम हो जाएंगे:

- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के अर्थ और प्रकृति के बारे में चर्चा हेतु;
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र और सकारात्मकतावाद के बीच मुख्य अंतर जानने में;
- इस उपागम में मैक्स वेबर के योगदान का वर्णन करने में;
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की अन्य शाखाओं के बारे में; तथा
- व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाओं के बारे में जानने में।

5.1 प्रस्तावना

यह इकाई पांच भागों में विभाजित है। खंड 3 संक्षेप में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र अर्थ और प्रकृति का एक सामान्य चित्र प्रस्तुत करता है। भाग 4 के अंतर्गत सकारात्मकतावाद या सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र और व्याख्यावाद या व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच मुख्य भिन्नताओं को सूचीबद्ध किया गया है। भाग 5 में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के क्षेत्र में मैक्स वेबर के योगदान के बारे में चर्चा की गई है, और अंततः भाग 6 में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाओं का एक समग्र खांके को प्रस्तुत किया गया है और वह भी विभिन्न

*यह इकाई प्रो. सुभद्रा चन्ना के द्वारा लिखी गई है।

विचारकों और उनके मुख्य विचारों एवं उनके महत्वपूर्ण कार्यों को ध्यान में रखते हुए। यह इकाई इस उपागम अर्थात व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाओं की चर्चा के साथ और अंततः मुख्य विचारों से संबंधित सारांश के साथ खत्म हुआ है।

5.2 अर्थ और परिभाषा

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र उन अर्थों पर प्रकाश डालता है जिन्हें लोग अपनी सामाजिक दुनिया से जोड़ते हैं। यह दर्शाता है कि लोग अपने दैनिक जीवन में स्वयं वास्तविकता का निर्माण करते हैं। चूंकि समाजशास्त्र को एक अनुशासन के रूप में फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्ट कॉम्टे द्वारा 19 वीं शताब्दी में स्थापित किया गया इसलिए समाज का अध्ययन विभिन्न तरीकों से विकसित हुआ है। कॉम्टे के पसंदीदा प्रत्यक्षवादी दर्शन में समाजशास्त्र का प्रारंभिक उदय गहराई से अंतर्निहित है जो समाज का अध्ययन करने हेतु वैज्ञानिक तरीकों और तकनीकों पर निर्भर था। सकारात्मकता के विकल्प के रूप में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का विकास हुआ। (हम इनके बीच के अंतर को खंड 4 में समझेंगे - देखेंगे)।

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र को समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि उन अर्थों की खोज करने पर बल देता है जिन्हें लोग अपनी सामाजिक दुनिया से जोड़ते हैं। समाजशास्त्र के क्षेत्र में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे आम तौर पर 'समझ' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि वर्स्टेहन (जर्मन शब्द जिसका अर्थ है 'मानव व्यवहार की सहानुभूतिपूर्ण समझ') अवधारणा में निहित है।यह एक उपागम है जो सामाजिक व्यवहार और अंतःक्रिया का अध्ययन करते समय अर्थ और क्रिया के महत्व को केंद्र में रखता है। यह उपागम सकारात्मक समाजशास्त्र के माध्यम से यह जानता है कि व्यक्तिपरक अनुभव, विश्वास और लोगों का व्यवहार इस बात के आंतरिक पहलू हैं कि हम किस बात का निरीक्षण करते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो विशुद्ध रूप से उद्देश्यपरक घटना जैसी कोई बात नहीं होती है। सहज सरल शब्दों में यह कह सकते हैं कि यह उपागम हमें जानकारी देता है कि समाज और सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने और समझने के लिए हमें 'दूसरे के जीवन को देखना समझना चाहिए क्योंकि बाहर से कुछ भी जान पाना संभव नहीं है। इस अवधारणा को समझने के लिए आइए हम निम्नलिखित उदाहरण को देखते हैं और इस प्रकार से यह एक बेहतर और आसान तरीका है। उदाहरण स्वरूप बॉक्स 1 को देखें।

बॉक्स 1

प्रेरकों की तर्कसंगत समझ व्याख्यात्मक समाजशास्त्र सम्मिलित होता है। उद्देश्य के संदर्भ में मैक्स वेबर (1978) ने सुझाव दिया कि हम 'लकड़ी की कटाई' अथवा 'बंदूक के लक्ष्य' को जानते-समझते हैं। हम जानते हैं कि लकड़हाड़ा मजदूरी के लिए यह कार्य कर रहा है और वह भी अपने खुद के उपयोग के लिए अथवा संभवतः वह यह कार्य पुनः सृजन हेतु कर रहा है। परंतु वह फिट ऑफ रेज (तर्कहीन मामला) के माध्यम से भी यह कार्य कर सकता है।

इसी प्रकार हम किसी व्यक्ति के बंदूक से निशाना साधने के मकसद को तब समझते हैं जब हम यह जानते हैं कि उसे किसी फायरिंग दस्ते के सदस्य के रूप में गोली चलाने की आज्ञा दी गई है चूंकि वह किसी दुश्मन के विरुद्ध लड़ रहा है, अथवा वह बदला लेने के लिए ऐसा कर रहा है (वेबर, 1978: 8-9)।

गतिविधि 1

बॉक्स 1 के उदाहरण को ध्यान से पढ़ें जो वर्स्टेन के मुख्य विचार से संबन्धित है। इस बारे में आप अपने मित्रों अथवा परिवार के सदस्यों के साथ चर्चा करें और देखें कि क्या आप अपने रोजमर्रा के जीवन से इस प्रकार के उदाहरण ढूंढ सकते हैं। यदि संभव हो तो अपने स्टडी सेंटर पर दूसरे छात्रों के नोट्स के साथ अपने खुद के नोट्स की तुलना करें।

5.3 सकारात्मकतावादी और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच अंतर

प्रत्यक्षवादी और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र में सामाजिक संदर्भ के अनुसार मानव व्यवहार के बारे में निष्कर्षों को देखने- समझने के लिए अपने खुद के अद्वितीय मानक हैं। उनके बीच की कुछ भिन्नताओं को आइए हम निम्नलिखित तालिका में देखते हैं

तालिका 1

	प्रत्यक्षवाद	व्याख्यात्मक
1	फ्रांसीसी समाजशास्त्री अगस्ट कॉम्टे और एमिल दर्खाइम द्वारा सकारात्मकतावाद की अवधारणा को विकसित किया गया जिसे प्राकृतिक अथवा तर्कसंगत विज्ञानों- भौतिकी अथवा रसायन विज्ञान के साथ जोड़ा गया।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र को जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर द्वारा शुरू किया गया और जॉर्ज सिमेल और दूसरे विद्वानों द्वारा विकसित किया।
2	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र का उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं को समझना है और वह भी अवलोकन एवं ज्ञान अथवा तथ्यों पर विश्वास करके।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का उद्देश्य अर्थ की प्रणाली के अंतर्गत विषय की स्थिति के माध्यम से क्रियाओं की पृष्ठभूमि के अर्थ को समझना है
3	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र किसी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को 'बाह्य रूप' में देखता है।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र वास्तविकता को किसी घटना के बारे में लोगों की अपनी समझ जिसका वे निर्माण करते हैं उस रूप में देखता है।
4	प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र मात्रात्मक तरीकों और ऑकड़ों का उपयोग करता है।	व्याख्यात्मक समाजशास्त्र गुणात्मक तरीकों और आंकड़े पर निर्भर करता है।

5.4 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की उत्पत्ति

5.4.1 मैक्स वेबर

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक जर्मन समाजशास्त्री, मैक्स वेबर (1864-1920) के योगदान में इस उपागम की उत्पत्ति अंतर्निहित है। वेबर की समाजशास्त्रीय लेखन की समृद्ध विरासत में धर्म के समाजशास्त्र के साथ ही समाज, अर्थशास्त्र, राजनीति एवं सरकार से संबन्धित रचनाएँ सम्मिलित हैं। वेबर के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट

ऑफ कैपिटलिज्म (1904) , द रिलिजन ऑफ इंडियाः द सोशियोलॉजी ऑफ हिंदूइज्म एंड बुद्धिज्म (1958) और इकोनॉमी एंड सोसाइटी (1978) सम्मिलित हैं। अनेक विषयों पर उन्होंने व्यापक रूप से लिखा है परंतु सामाजिक क्रिया और शक्ति तथा वर्चस्व की व्याख्यात्मक समाजशास्त्र विकसित करने पर उन्होंने अपना ध्यान अधिक केंद्रित किया है (ऍरोन, 1967; बेंडिक्स, 1960) । आधुनिक समाज में युक्तिकरण की प्रक्रिया और इस प्रक्रिया के संग दुनिया के विभिन्न धर्मों के अंतर-संबंध वेबर की दूसरी प्रमुख चिंता थी। सकारात्मकतावाद के साथ समझौता करने के प्रयास के रूप में समाजशास्त्र के प्रति उनके उपागम को देखा-समझा जा सकता है और इसका उद्देश्य वैज्ञानिक समाजशास्त्र का सृजन करना है (बिल्टन एट अल, 1981)। समाजशास्त्र को वेबर ने 'विज्ञान के रूप में परिभाषित किया है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ के रूप में देखता है ताकि उसकी प्रक्रिया और प्रभावों का एक अनियत स्पष्टीकरण प्राप्त हो सके' (वेबर, 1964: 88)। सामाजिक क्रिया को यहां पर पारस्परिक रूप से उन्मुख क्रिया के रूप में देखने-समझने की आवश्यकता है जिसे जानबूझकर, सार्थक और प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। समकालीन समाजशास्त्र के क्षेत्र में हम यह कह सकते हैं कि इस अवधारणा का अर्थ अंतःक्रिया से है।

इस इकाई में हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि वेबर ने एक महत्वपूर्ण सुव्यस्थित अवधारणा को शुरु किया जिसे वर्स्टेहन कहा जाता है जिसका तात्पर्य है अर्थ के स्तर पर जानना अथवा समझना। वेबर का यह मानना था कि इस पहलू से सामाजिक विज्ञानों को प्राकृतिक विज्ञानों का फायदा मिला। जहाँ प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में हम केवल निरीक्षण और सामान्यीकरण कर सकते हैं वहीं सामाजिक विज्ञान क्षेत्र में हम कार्यों को समझ सकते हैं और कार्य करने वालों की व्यक्तिपरक उद्देश्य को भी जान सकते हैं (अब्राहम, 2015: 17)। फलस्वरूप यह दो प्रकार से सामाजिक व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन को अंजाम देता है: एक ओर यह हमें क्रियाओं के अर्थ को सीधे तौर पर देखने और समझने का अवसर प्रदान करता है तो दूसरी ओर यह अंतर्निहित उद्देश्य की समझ की सुविधा प्रदान करता है। जब कोई रसायनविद किसी विशेष पदार्थ के गुणों का अध्ययन करता है तो वह बाह्य तौर पर ऐसा अध्ययन करता है। जब कोई समाजशास्त्री मानव समाज और संस्कृति को जानने-समझने का प्रयास करता है तो वह इसे एक आंतरिक सूत्र अथवा प्रतिभागी के रूप में देखता है। एक इंसान होने के नाते सामाजिक वैज्ञानिक अपने विषय के उद्देश्यों एवं भावनाओं तक सुगमता से पहुंच पाते हैं। व्यक्तिपरक क्रिया की जांच करके सामाजिक वैज्ञानिक मानव क्रियाओं को समझ सकते हैं कि कार्य करने वाले अपने खुद के व्यवहार के साथ दूसरों के साथ भी जुड़ते हैं। इस प्रकार समाजशास्त्रीय ज्ञान और समझ दूसरे (प्राकृतिक) विज्ञानों से गुणात्मक रूप से अलग है।

वेबर इस बात का उल्लेख करते हैं कि कोई प्राकृतिक वैज्ञानिक बाहर से ही प्राकृतिक घटनाओं को समझता है। परंतु वर्स्टेन की विधि का इस्तेमाल करके समाजशास्त्री को वस्तुस्थिति की समझ द्वारा भावनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हुये कार्य करने वालों की प्रेरणाओं की कल्पना करनी चाहिए। हम इस बात को जान सकते हैं कि इस उपागम हेतु वेबर का योगदान सर्वोच्च था क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण के साथ सामाजिक क्रियाओं की अवधारणा को जोड़ने की कोशिश की । यह सब केवल और केवल वर्स्टेन (व्याख्यात्मक समझ) के इस्तेमाल से संभव था। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाजशास्त्री कार्य करने वालों के लिए क्रियाओं के अर्थ तक पहुँचने की कोशिश करता है। वेबर के संदर्भ में क्रिया को व्यक्तिपरक सार्थक मानवीय व्यवहार के तौर पर परिभाषित किया गया है। वह कार्य करने वाले के मस्तिष्क में मौजूद 'उद्देश्य' पर भी बल देता है क्योंकि यह किसी भी क्रिया का 'कारण' होता है।

वेबर का यह तर्क है कि सामाजिक विज्ञान का समग्र उद्देश्य 'सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ' को विकसित करना होता है। चूंकि सामाजिक विज्ञान का मुख्य उद्देश्य सामाजिक क्रिया से जुड़ा हुआ है और चूंकि मानव क्रियाओं में आवश्यक रूप से व्यक्तिपरक अर्थ सम्मिलित होते हैं इसलिए सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में जांच के तरीके भी प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों से भिन्न होते हैं। वेबर के लिए सामाजिक क्रिया में सभी प्रकार के मानवीय व्यवहार सम्मलित थे जो सार्थक थे। अर्थात क्रिया जिससे कर्ता (कार्य करने वाला) अर्थ जुड़ा होता है। सामाजिक क्रिया का अध्ययन करते समय समाजशास्त्री का कार्य उस कार्य को करने वाले द्वारा निहित अर्थों की खोज करना था। इस कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से किसी समाजशास्त्री को कार्य करने वाले के स्थान पर खुद को रखना चाहिए , और कल्पना करना चाहिए कि वे अर्थ कौन से हैं अथवा हो सकते हैं जिन्हें एक संवेदनशील समझ के रूप में जाना जाता है।

इसके बारे में रेमंड ऍरोन (1967) निम्नलिखित उदाहरण के साथ चर्चा करते हैं : कोई इस बात को समझ सकता है कि ड्राइवर लाल बत्ती पर क्यों रुकता है। उसे यह देखने की आवश्यकता नहीं है कि ड्राइवर लाल बत्ती पर कितनी बार रुकते हैं जिससे वह इस बात को समझ सके कि ड्राइवर लोग ऐसा क्यों करते हैं। यह इसलिए है क्योंकि दूसरे लोगों के कार्यों का व्यक्तिपरक अर्थ आम तौर पर दैनिक जीवन में तुरंत व्यापक होता है (ऍरोन, 1971: 191)। इन्हीं बातों के चलते वेबर ने तर्क दिया कि सामाजिक विज्ञानों का समग्र उद्देश्य 'सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ' को विकसित करना है। वेबर इस बात को विकसित और व्यक्त करना चाहते थे कि यह विज्ञान इस प्रकार से प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत भिन्न होता है जिसका उद्देश्य भौतिक संसार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से 'प्रकृति के नियमों' की पड़ताल करना है। उनका यह भी मानना था कि सामाजिक विज्ञान की प्राथमिक उद्देश्य सामाजिक क्रिया से संबन्धित है जिसमें व्यक्तिपरक अर्थ सम्मलित होते हैं। अतः सामाजिक विज्ञान के तरीके भी प्राकृतिक विज्ञान के तरीकों से भिन्न होते हैं।

वेबर यह भी चाहते थे कि वे एक वैकल्पिक उपागम (सकारात्मकता हेतु) स्थापित करें जो व्यक्तिपरक अनुभव को समझने पर केंद्रित हो और जो मात्र अवलोकन या तथ्यों के अनुपालन पर आधारित न हो। परिणामस्वरूप कथित तथ्य जो सकारात्मकतावादी अवलोकन पद्धति में निहित होते हैं वे विभिन्न व्यक्तियों के उपागम से पूर्णहः नवीन अर्थ धारण कर सकते हैं। सांस्कृतिक और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में व्याख्या की भूमिका पर वेबर ने लगातार बल दिया। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि सामाजिक वैज्ञानिकों को किसी समाज के 'नियमों' को समझने के लिए कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें सामाजिक अभिकर्ताओं के कार्यों और मान्यताओं की 'व्याख्या' और 'प्रतिपादन' करना चाहिए।

इस उपागम के दूसरे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता जॉर्ज सिमेल हैं जो कि मैक्स वेबर के समकालीन थे। वह एक बहुत ही प्रसिद्ध प्रारंभिक समाजशास्त्री थे और उन्हें व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के एक प्रमुख प्रतिपादक के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। वेबर और सिमेल दोनों ने यह माना कि सभी सामाजिक घटनाओं पर नजर रखने में सकारात्मकतावादी उपागम सक्षम नहीं था और न ही यह उपागम सभी सामाजिक घटनाओं के बारे में इस बात को समझाने में सक्षम था कि आखिर सभी सामाजिक घटनाएं क्यों घटती हैं।

बोध प्रश्न 1

1) लगभग दो लाइनों में इस बात का वर्णन करें कि वर्स्टेहन का क्या अर्थ है ?

.....

.....

.....

.....

2) सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र और व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के बीच तीन भिन्नताओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

3) व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के क्षेत्र में मैक्स वेबर के योगदान के संबंध में लगभग पांच लाइनों में चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

5.5 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की शाखाएँ

सामाजिक निर्माणवादी उपागम की सामान्य श्रेणी के अंतर्गत व्याख्यात्मक उपागम ने समाजशास्त्र की विविध सैद्धांतिक परंपराओं को विकसित किया । उनमें से कुछ प्रमुख हैं- प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, नाट्य-शास्त्र, दृश्यप्रपंचशास्त्र और जातिप्रणालीविज्ञान। वास्तविकता संबंधी सामाजिक निर्माण की धारणा प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम के केंद्र में निहित होती है। दैनिक जीवन के अध्ययन का वर्णन करते हुए एंथोनी गिडेंस ने हमें यह बताया है कि मनुष्य वास्तविकता को आकार देने के लिए सृजनात्मक रूप से किस प्रकार कार्य कर सकता है और सामाजिक व्यवहार कुछ सीमा तक विभिन्न बलों जैसे कि भूमिका मानदंड और साझा अपेक्षाओं द्वारा निर्देशित होते हैं। वह हमें यह भी बताते हैं कि कोई व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि, रुचियों और प्रेरणाओं के अनुसार वास्तविकता को अलग अलग प्रकार से समझते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वास्तविकता स्थिर या स्थायी नहीं है - वास्तविकता मानव अंतःक्रिया से बनती है। (गिडेंस, 2006: 130)।

वालेस और वुल्फ (1995: 183-184) यह सुझाव देते हैं कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य के अग्रणी और प्रत्यक्ष योगदानकर्ताओं में जॉर्ज सिमेल और रॉबर्ट पार्क का नाम सम्मिलित हैं। हालांकि सामाजिक जीवन को जानने- समझने के लिए मैक्स वेबर का योगदान और उनके द्वारा वर्स्टेहन (व्याख्यात्मक समझ अथवा व्यक्तिपरक अर्थ) पर बल देना अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसने वेबर की 'लघु' और 'सूक्ष्म' परिप्रेक्ष्य को कम करने की क्षमता को भी दिखाया। निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अंतर्गत अंतःक्रियात्मक उपागम के बारे में संक्षिप्त चर्चा की जाएगी, ताकि इस बात को समझा जा सके कि ये सैद्धांतिक परंपराएं

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के लिए किस प्रकार और क्यों अभिन्न हैं। आइए इसकी शुरुआत हम प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद से करते हैं।

5.5.1 प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद उत्तरी अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों में से एक है। इसकी जड़ें दार्शनिक जॉर्ज हर्बर्ट मीड तक जाती हैं। इस परिप्रेक्ष्य को विकसित करने वाले समाजशास्त्रियों में हर्बर्ट ब्लूमर और इरविंग गोफमैन का नाम सम्मिलित है। इस परिप्रेक्ष्य के संस्थापक-जनक के रूप में जॉर्ज हर्बर्ट मीड का नाम प्रसिद्ध है, हालाँकि इस परिप्रेक्ष्य को उनके शिष्य हर्बर्ट ब्लूमर द्वारा नाम दिया गया और लोकप्रिय बनाया गया। हालांकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियात्मक उपागम सामान्य रूप से मीड से संबन्धित है। वह हर्बर्ट ब्लूमर ही थे जिन्होंने मीड के विचारों को आत्मसात किया और उन्हें अधिक व्यवस्थित समाजशास्त्रीय उपागम के रूप में विकसित किया। ब्लूमर ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद अवधारणा को सृजित किया। आम तौर पर ब्लूमेरियन प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद को 'शिकागो स्कूल ऑफ सिंबोलिक इंटरेक्शनिज्म' के नाम से जाना जाता है।

कुछ प्रमुख विशेषताओं में अंतःक्रियाओं का अध्ययन, क्रिया की व्याख्या और खुद का सामाजिक निर्माण सम्मिलित है। एम फ्रांसिस अब्राहम (2015) का यह कहना है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद एक प्रकार से सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य है जो विशिष्ट तौर पर समाजशास्त्र के लिए प्रासंगिक है। अमूर्त सामाजिक संरचनाओं अथवा व्यक्तिगत व्यवहार के ठोस रूपों का सामना करने के स्थान पर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में वार्तालाप की प्रकृति, सामाजिक क्रिया और सामाजिक संबंधों के पैटर्न पर बल दिया जाता है (अब्राहम, 2015: 36)।

5.5.1.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड का योगदान

जॉर्ज हर्बर्ट मीड के अनुसार समाजीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि किसी बच्चे के जीवन में दूसरों के विचारों के प्रति कैसी समझ है। मीड (1972) खुद के विकास में दो चरणों पर बल देते हैं : स्वयं के विकास में 'खेल' और 'क्रीड़ा' के चरण महत्वपूर्ण होते हैं। सबसे अहम बात यह है कि दोनों चरण अंतःक्रिया पैटर्न पर निर्भर हैं। मीड का यह कहना है कि, 'खेल' के चरण में बच्चा किसी व्यक्ति और पशुओं कि उन भूमिकाओं को निभाता है जो किसी न किसी रूप में उसके जीवन में घर कर जाती हैं। हालांकि खेल के चरण में कोई व्यक्ति सभी रूप धारण कर लेता है जो दूसरों द्वारा किया जाता है - किसी की भूमिका के सफलतापूर्वक निर्वहन के लिए स्वयं की पूरी संगठित गतिविधि का होना जरूरी है। यहाँ किसी व्यक्ति ने न केवल कोई विशिष्ट दूसरी भूमिका निभाई है अपितु सामान्य गतिविधि में भाग लेने वाले किसी दूसरे व्यक्ति की भांति कार्य किया है और उसने भूमिका-निर्वहन के उपागम को सामान्यीकृत किया है (मीड, 1972: xxiv)।

बॉक्स 2

'स्वयं' के विकास संबन्धित मीड का उदाहरण

बच्चों का खेल धीरे-धीरे सरल अनुकरण से होता हुआ कठीन खेलों तक विकसित होता है जहां पर चार-पांच साल का बच्चा किसी वयस्क की भूमिका का निर्वहन करेगा। उदाहरण स्वरूप बच्चों को आम तौर पर कक्षा की स्थिति का अनुकरण करते हुए देखा जाता है जहां पर कोई बच्चा शिक्षक बन जाता है तो दूसरे बच्चे छात्र बन जाते हैं और वे कक्षा शिक्षण सत्र की भूमिका निभाने का नाटक करते हैं। अधिकतर बच्चे स्थानीय तौर पर इस नाटक को 'शिक्षक-शिक्षक' के नाम से जानते हैं।

इस प्रकार का एक और नाटक 'डॉक्टर और मरीज' का है जहाँ बच्चे डॉक्टर, नर्स और मरीज की भूमिका का अनुकरण करते हैं और ऐसी स्थिति को दिखाने का प्रयास करते हैं जहाँ कोई मरीज इलाज हेतु किसी डॉक्टर के पास जाता है।

इस प्रकार मीड ने 'सामान्यीकृत अन्य' और 'महत्वपूर्ण दूसरे' की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है। 'सामान्यीकृत दूसरे' को किसी विशेष समूह की संस्कृति के उन नियमों और मूल्यों के तौर पर जाना-समझा जा सकता है जिसमें बच्चे सम्मलित हुए हैं। 'सामान्यीकृत दूसरे' को समझने के माध्यम से बच्चा यह समझने में सक्षम होता है कि किसी भी समाज में किस तरह के शिष्टाचार की अपेक्षा होती है। 'महत्वपूर्ण दूसरे' में उन व्यक्तियों को सम्मलित किया जाता है जो कि बच्चे के जीवन में महत्व रखते हैं और बच्चे की भावनाओं और व्यवहारों को खुद अपनी भूमिका से प्रभावित करते हैं। इसलिए जहाँ मीड ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद की नींव रखी उनके शिष्य हर्बर्ट ब्लूमर ने इस उपागम को प्रसिद्धि प्रदान की। आइए निम्नलिखित पैराग्राफ के माध्यम से उनके योगदानों पर विस्तार से विचार करते हैं।

5.5.1.2 हर्बर्ट ब्लूमर का योगदान

हर्बर्ट ब्लूमर (1969) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद तीन मुख्य बातों पर आधारित है। सर्व प्रथम यह है कि मनुष्य वस्तुओं के उन अर्थ के आधार पर कार्य करता है जो अर्थ वह उन चीजों या वस्तुओं से ग्रहण करता हैं। पेड़ या कुर्सियाँ या मनुष्यों जैसे मित्र या शत्रु, या यहाँ तक कि स्कूल या सरकारी भवन जैसी संस्थाएँ जो कि अपने आप में भौतिक वस्तुएँ ऐसी चीजों में सम्मिलित हो सकती हैं। इसका दूसरा आधार यह है कि ऐसी बातों का अर्थ सामाजिक मेल मिलाप से ग्रहण किया जाता है जो किसी की संगति से मिल सकता है। तीसरा आधार यह है कि इन अर्थों को व्याख्यात्मक प्रक्रिया द्वारा संशोधित किया जाता है जो कोई व्यक्ति किसी वस्तु से व्यवहार के अंतर्गत प्रयोग की जाती है। (ब्लूमर, 1969: 2)। इसलिए प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का अर्थ है कि केवल दो प्रमुख विचारों से निकलने वाले अर्थ से है जिसके अलग स्रोत हों। इसके स्थान पर यह लोगों के बीच वार्तालाप की प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले अर्थ को देखता है।

यहाँ पर संक्षेप में ब्लूमर के उपागम के मूल को उनके तीन प्रस्तावों में समाहित किया जा सकता हैः पहला यह है कि मनुष्य दूसरे लोगों और चीजों के अनुरूप कार्य करता है जो अर्थ उन लोगों या चीजों को दिया जाता है। दूसरी बात यह है कि भाषा मनुष्य को एक ऐसा साधन प्रदान करती है जिसके द्वारा प्रतीकों के माध्यम से अर्थ के बारे में वार्तालाप की जाती है। तीसरी बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के विचार प्रतीकों की व्याख्या को संशोधित करते हैं। लोग इस प्रकार अपने जीवन अनुभवों और दृष्टिकोणों के आधार पर स्थितियों को विभिन्न तरीकों से परिभाषित करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों हेतु व्याख्या बहुत अहम है।

अतः ब्लूमर ने यह कहा कि हम सामाजिक वार्तालाप के सबसे मर्मज्ञ विश्लेषण हेतु जॉर्ज हर्बर्ट मीड के ऋणी हैं। जहां मीड ने मानव समाज में सामाजिक वार्तालाप के दो रूपों या स्तरों की पहचान की है जिसे वह 'इशारों का वार्तालाप' और 'महत्वपूर्ण प्रतीकों का उपयोग' के रूप में संदर्भित करते हैं वहीं ब्लूमर इन अवधारनाओं को 'गैर-प्रतीकात्मक वार्तालाप' और 'प्रतीकात्मक वार्तालाप' के रूप में जानते-समझते हैं। इसके आगे ब्लूमर यह कहते हैं कि 'गैर-प्रतीकात्मक वार्तालाप' तब होता है जब कोई उस क्रिया की व्याख्या किए बिना दूसरे की क्रिया पर सीधे प्रतिक्रिया करता है; जबकि, 'प्रतीकात्मक वार्तालाप' में किसी क्रिया की व्याख्या सम्मिलित होती है। आइए इस बात को एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं। ब्लूमर का यह सुझाव है कि 'गैर-प्रतीकात्मक अंतःक्रिया' को रिफ्लेक्स प्रतिक्रियाओं में देखा

जा सकता है। उदाहरण स्वरूप कोई मुक्केबाज के मामले में जो स्वतः ही झटका देने हेतु अपनी बांह को ऊपर उठा लेता है। हालाँकि, यदि मुक्केबाज अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर से आने वाले झटके को पहचानने के लिए एक फैंट के रूप में प्रतिबिंबित करता है, तो वह प्रतीकात्मक वार्तालाप में उलझा रहेगा (ब्लूमर, 1969: 8-9)। इस प्रकार अधिक महत्वपूर्ण बात और वेबर के सिधान्त पर आने से हम समझ सकते हैं कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसमें प्रतिबिंब और क्रिया की व्याख्या सम्मिलित है।

5.5.2 नाट्य-शास्त्र

ब्लूमर के प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम को लोकप्रिय बनाने के अतिरिक्त इस परिप्रेक्ष्य में एक दूसरे प्रमुख योगदानकर्ता इरविंग गोफमैन थे। उन्होंने एक विशेष प्रकार के अंतःक्रियावादी पद्धति को नाटकीय उपागम के रूप में लोकप्रिय बना कर विशिष्ट योगदान दिया। व्याख्यात्मक उपागम से ही नाटकीय उपागम भी निकला है और यह रोजमर्रा के जीवन की तुलना में किसी नाटक की स्थापना – किसी रंगमंच या किसी मंच से करता है। एम फ्रांसिस अब्राहम का यह कहना है कि, ''नाट्यशास्त्रीय उपागम सामाजिक वार्तालाप का अध्ययन है क्योंकि प्रतिभागी किसी नाटक में पात्र होते हैं .... इसलिए सामाजिक व्यवहार मंचित नाटक के अनुरूप हो जाता है (अब्राहम, 2015: 98)।

गोफमैन द्वारा प्रसिद्ध यह उपागम निम्नलिखित बातों पर आधारित है। जिस प्रकार पात्र हमारे सामने कार्य करते हैं और जिस प्रकार वे हमारे समक्ष कुछ दृश्य या चित्र पेश करते हैं, वैसे ही हम लोग भी बाहरी दुनिया के समक्ष अपने व्यक्तित्व के कुछ गुणों को प्रस्तुत करना पसंद करते हैं; और साथ ही हम उनमें से कुछ को छिपाना भी पसंद करते हैं।

बॉक्स 3

उदाहरण

हमें क्लास अथवा परीक्षा के दौरान एक गंभीर छवि बनाने की आवश्यकता महसूस हो सकती है; इसके विपरीत हालांकि किसी पार्टी में आराम करना और दूसरों को खुश करने के लिए गंभीर नहीं दिखना महत्वपूर्ण हो सकता है।

उदाहरण (बॉक्स 3) इस बात का उल्लेख करता है कि गोफमैन का मुख्य उद्देश्य इंप्रेशन प्रबंधन की प्रक्रिया को समझने में रहा है। इसलिए व्यक्ति न केवल खुद को एक-दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करने योग्य तरीके से पेश करते हैं, अपितु वे उस छवि का प्रबंधन करने की भी कोशिश करते हैं जिसे वे प्रस्तुत करते हैं। यह पहलू नाटकीयता को एक महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करता है। इसी कारण इसका मानना है कि 'सारी दुनिया एक रंगमंच है' और लोग परस्पर क्रियाओं का सामना करने हेतु अपने कृत्यों का प्रबंधन करते हैं। यह क्रिया के नजरिए को भी एक प्रकार से जटिल आयाम प्रदान करता है। जैसा कि वेबर ने अर्थ की अवधारणा को स्थापित किया है और यदि हम क्रियाओं के अर्थों को समझते हैं तो यह आवश्यक है कि किसी व्यक्ति को प्रभाव प्रबंधन के कार्य में शामिल किया जाए या नहीं, इस बात की जांच करने हेतु वार्तालाप के दौरान पूर्ण रूपेण खुद को सम्मिलित किया जाए।

अतः बिल्टन एट अल (1981) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी उपागम क्रिया परिप्रेक्ष्य के रूप में विशेष रूप से लघु सतर पर वार्तालाप, व्यक्तित्व विकास और विचलित व्यवहार के अध्ययन में व्यापक रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। मीड का कार्य जैविक और सहज तत्वों के बहिष्कार के लिए स्वयं के सामाजिक निर्माण पर बल देता है। गोफमैन की रचना अस्यलूम्स (1961) इस परिप्रेक्ष्य को अपनाने वाला एक क्लासिक अध्ययन है जिसमें वह मानसिक रोगियों और अन्य कैदियों के कैरियर और सामाजिक

स्थिति को उनके संबंधित संस्थानों में देखते हैं। इसलिए व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के संबंध में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के महत्व को समझने वाली कड़ी दृश्य प्रपंच शास्त्र और जाति प्रणालीविज्ञान को हम यहाँ पर आगे देखेंगे।

5.5.3 दृश्य प्रपंच शास्त्र

दृश्यप्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र काफी हद तक अल्फ्रेड शुट्ज के कार्यों से विकसित हो पाया जिन्हें द फेनोमेनोलॉजी ऑफ द सोशल वर्ल्ड (1967) के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। शुट्ज का यह सुझाव है कि क्रिया के दौरान हम समाज के बारे में धारणाओं को काम में लेते हैं कि यह किस प्रकार कार्य करता है और हम दूसरों की क्रिया की भविष्यवाणी करने के लिए कच्चे रास्ते में वर्स्टेहन का इस्तेमाल करते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे कार्य 'सार्थक' होते हैं, क्योंकि हमारा कोई विशेष उद्देश्य या उद्देश्य नहीं होता है, परंतु दूसरा पात्र प्रतीकात्मक महत्व रखते हुए हमारी क्रिया की व्याख्या करते हैं। यह कहा जाता है कि घटनात्मक उपागम व्याख्यात्मक उपागम का रूप धरण कर लेता है जिसे प्रारम्भ में मैक्स वेबर द्वारा और तदुपरान्त दूसरे विचारकों द्वारा चरम स्तर तक विकसित किया गया।

इसके अतिरिक्त यह परिप्रेक्ष्य आगे बताता है कि हमारी वास्तविकता में सिर्फ अर्थ होते हैं; इसलिए समाजशास्त्री का काम क्रियाओं और व्यवहार के अर्थों की जांच करना है और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। इस उपागम को प्रसिद्ध करने के लिए शुट्ज ने मैक्स वेबर की कार्यप्रणाली की आलोचना करने हेतु एडमंड हसेरेल के दर्शन का उपयोग किया। उन्होंने सामाजिक क्रिया की प्रकृति के कट्टरपंथ के निर्माण के लिए ऐसा किया। शुत्ज के अनुसार वेबर किसी भी वास्तविक बात को प्रस्तुत करने में विफल रहे जिसमें सामाजिक अवधारणाओं, प्रतीकों और अर्थों के साझा सेट के आधार पर कार्यों को सृजित किया जा सकता है।

ठोस सामाजिक अस्तित्व की औपचारिक संरचनाओं का अध्ययन दृश्य प्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र है जो कि सोचे समझे कृत्यों के विश्लेषणात्मक विवरण के माध्यम से उपलब्ध किया जाता है। ऐसे विश्लेषण का ध्यय रोजमर्रा जीवन अथवा 'जीवन-जगत' की सार्थक जीवंत दुनिया-संसार है। बिल्टन एट अल (1981: 739-40) का यह सुझाव है कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों ने साझा परिभाषाओं को अंगीकार किया और भाषा के सहारे प्रतीकात्मक संचार पर बल दिया। इसी कारण शुत्ज ने मूलभूत रूप से यह सुझाव देने के उद्देश्य से इस परिप्रेक्ष्य को विकसित किया कि हम सभी लोग उसी स्थिति में सफलतापूर्वक कार्य करते हैं जब हम सभी लोग एक समान अर्थों को साझा करते हैं। इस उपागम को इस प्रकार हम अनेक विधियों से व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के पारंपरिक मॉडल से विचलन के रूप में समझ सकते हैं।

वेबर की भांति शुत्ज का यह मानना था कि सामाजिक अनुसंधान भौतिक विज्ञानों के अनुसंधान से भिन्न होता है और लोग दुनिया-संसार को समझने में संलग्न होते हैं। दूसरे मित्रों के संग वार्तालाप करते हुए हम उनकी समझदारी को समझने का प्रयास कर रहे हैं। वह गुण जो सामाजिक विज्ञानों को दूसरों से अलग करता हैं वह यह है कि सामाजिक वैज्ञानिक असंतुष्ट पर्यवेक्षक की भूमिका में रहते हैं। सामाजिक वैज्ञानिक प्रेक्षण किए जा रहे लोगों के जीवन में शामिल नहीं होते हैं - उनकी गतिविधियां किसी भी व्यावहारिक स्वार्थ से नहीं जुड़ी होती हैं अपितु उनकी गतिविधियों का संबंध केवल संज्ञानात्मक अभिरुचि से होता है। वेबरियन मॉडल के विपरीत यहां पर साझा अर्थ और सामान्य ज्ञान को महता प्राप्त होती है जिसमें केवल व्यक्तिपरक अनुभवों को मुख्य रूप से महत्व दिया जाता है।

5.5.4 जाति प्रणाली विज्ञान

इस अंतिम उप-भाग के अंतर्गत हम जाति प्रणाली विज्ञान संबंधी उपागम के बारे में चर्चा करेंगे। हालांकि जातिप्रणाली विज्ञान अवधारणा वृहत और भ्रामक प्रतीत होती है परंतु एक बार जब हम इस अवधारणा को दो भागों में विभाजित कर देते हैं तो अर्थ अत्यंत आसान हो जाता है। हेरोल्ड गार्फिंकल द्वारा जाति प्रणाली विज्ञान अवधारणा को बनाया गया जिन्हें उनकी कृति स्टडीस इन एथेनोमेथोडोलॉजी (1967) के लिए जाना जाता है। 'एथनो' समाज के सदस्यों हेतु मौजूदा सामान्य ज्ञान के भंडार को संदर्भित करता है; और 'मेथोडोलॉजी' उन रणनीतियों को संदर्भित करता है जिनको कर्ता अपने अर्थों को समझने योग्य बनाने के लिए विभिन्न सेटिंग्स में उपयोग करते हैं। समाजशास्त्र के अंतर्गत जाति प्रणाली विज्ञान एक उपागम है जो लोगों को उनके रोजमर्रा के संसार को समझने की विधि पर प्रकाश डालता है। इस बारे में गार्फिंकेल का यह मानना है कि "जाति प्रणाली विज्ञान संबंधी अध्ययन रोजमर्रा की उन गतिविधियों का विश्लेषण करता है जो सदस्यों के लिए सभी गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से तर्कसंगत और व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कारगर बनाता हो। (गार्फिंकेल, 1967: vii)।

लोगों को तर्कसंगत कर्ताओं के रूप में देखा जाता है परंतु समाज में कार्य करने और अर्थ को संदर्भित करने हेतु औपचारिक तर्क के स्थान पर व्यावहारिक तर्क का प्रयोग किया जाता है। यह उन तरीकों के विश्लेषण के बारे में बताता है जिनको हम सक्रिय रूप से समझ लेते हैं कि दूसरों के कहने और करने का क्या तात्पर्य है। प्रत्येक दिन का हाम्रा अधिकांश समय दूसरों के साथ अनौपचारिक वार्तालाप में व्यतीत होता है। गार्फिंकेल ने इन वार्तालाप का विश्लेषण किया। उन्होंने इस बात को दर्शाया है कि किस प्रकार ये वार्तालाप साझी समझ और ज्ञान पर आधारित होते हैं। वह इस साझी समझ और ज्ञान को 'पृष्ठभूमि की अपेक्षाओं' के रूप में संदर्भित करते हैं। इस सिद्धांत का यह तर्क है कि मानव समाज जानकारी और समझ को अर्जित करने एवं उसे प्रदर्शित करने के लिए इन तरीकों पर पूरी तरह से निर्भर है।

हालांकि इस उपागम को गार्फिंकेल द्वारा विकसित किया गया परंतु यह शुत्ज के मैक्स वेबर के व्याख्यात्मक समाजशास्त्र के दृश्य प्रपंच शास्त्र पुनर्निर्माण पर आधारित है। बिल्टन एट अल (1981) ने यह माना है कि एथ्नोमेथोडोलॉजिस्ट शुत्ज के इस दावे के आधार पर काम करते हैं कि सामाजिक संसार का सृजन और पुनर्सृजन कर्ताओं के व्यावहारिक कार्यों द्वारा किया जाता है जो कि मान्यताओं पर आधारित होते हैं। अतः सबसे अहम बात यह है कि जातिप्रणाली विज्ञान की जड़ें प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और दृश्यप्रपंच शास्त्र के संलयन में अंतर्निहित हैं।

बोध प्रश्न 2

1) लगभग दो पंक्तियों में इस बात का वर्णन करें कि नाट्य-शास्त्र से क्या तात्पर्य होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद की तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

3) दृश्य प्रपंच शास्त्र के बारे में अल्फ्रेड शुत्ज के योगदान के संबंध में तीन पंक्तियों में चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

5.6 व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की सीमाएँ

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की अनेक सीमाएँ होती हैं। इनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं:

- यह संभव होता है कि अवलोकन व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से प्रभावित हो।
- प्रत्यक्ष अवलोकन में जिस संस्कृति का अध्ययन किया जा रहा हो उसके बारे में पूर्व ज्ञान की भी जरूरत होती है।
- यह माना जाता है कि समाज में लोग अपने कार्यों को तर्कसंगत मानते हैं जो कि सदैव ऐसा नहीं हो सकता।
- कार्यों को अपर्याप्त माना जाता है क्योंकि कार्य सदैव व्यक्तिवादी होते हैं।

5.7 सारांश

व्याख्यात्मक सिद्धांत स्वतंत्र इच्छा की अत्यधिक स्वीकार्यता है और यह मानव व्यवहार को पर्यावरण की व्यक्तिपरक व्याख्या के परिणाम के रूप में देखता है। व्याख्यात्मक सिद्धांत कर्ता की उस स्थिति पर अधिक बल देता है जिसमें वे कार्य करते हैं। हालाँकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का प्रादुर्भाव मैक्स वेबर के इस दावे से हुआ है कि व्यक्ति अपने दुनिया-संसार के अर्थ संबंधी खुद की व्याख्या के अनुरूप कार्य करते हैं पर अमेरिकी दार्शनिक जॉर्ज हर्बर्ट मीड ने इस परिप्रेक्ष्य को अमेरिकी समाजशास्त्र से रूबरू करवाया। समाजशास्त्रीय सिद्धांत की प्रमुख अवसंरचना प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद है। यह परिप्रेक्ष्य प्रतीकात्मक अर्थ पर इसलिए निर्भर है क्योंकि सामाजिक वार्तालाप की प्रक्रिया में लोगों के अर्थ विकसित होते हैं और वे उन पर विश्वास करते हैं। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद उपागम का मुख्य ध्यय वास्तविकता के सामाजिक निर्माण की धारणा होती है।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इसे आम तौर पर 'समझ' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि वेरस्टेन (जर्मन शब्द जिसका अर्थ है 'मानव व्यवहार की सहानुभूतिपूर्ण समझ')अवधारणा में

निहित है। यह एक उपागम है जो सामाजिक व्यवहार और अंतःक्रिया का अध्ययन करते समय अर्थ और क्रिया के महत्व को केंद्र में रखता है।

2) फ्रांसीसी समाजशास्त्री अगस्ट कॉम्टे और एमिल दर्खाइम द्वारा सकारात्मकतावाद की अवधारणा को विकसित किया गया जिसे प्राकृतिक अथवा तर्कसंगत विज्ञानों- भौतिकी अथवा रसायन विज्ञान के साथ जोड़ा गया। व्याख्यात्मक समाजशास्त्र जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर के काम के माध्यम से विकसित हुआ। सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र का उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं को समझना है और वह भी अवलोकन एवं ज्ञान अथवा तथ्यों पर विश्वास करके। दूसरी ओर, व्याख्यात्मक समाजशास्त्र का उद्देश्य अर्थ की प्रणाली के अंतर्गत विषय की स्थिति के माध्यम से क्रियाओं की पृष्ठभूमि के अर्थ को समझना है।

सकारात्मकतावादी समाजशास्त्र किसी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को 'बाह्य रूप' में देखता है। दूसरी ओर, व्याख्यात्मक समाजशास्त्र वास्तविकता को किसी घटना के बारे में लोगों की अपनी समझ जिसका वे निर्माण करते हैं उस रूप में देखता है।

3) वेबर का यह मानना था कि इस पहलू से सामाजिक विज्ञानों को प्राकृतिक विज्ञानों का फायदा मिला। वेबर इस बात का उल्लेख करते हैं कि कोई प्राकृतिक वैज्ञानिक बाहर से ही प्राकृतिक घटनाओं को समझता है। परंतु वर्स्टेन की विधि का इस्तेमाल करके समाजशास्त्री को वस्तुस्थिति की समझ द्वारा भावनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करते हुये कार्य करने वालों की प्रेरणाओं की कल्पना करनी चाहिए। हम इस बात को जान सकते हैं कि इस उपागम हेतु वेबर का योगदान सर्वोच्च था क्योंकि उन्होंने वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण के साथ सामाजिक क्रियाओं की अवधारणा को जोड़ने की कोशिश की । यह सब केवल और केवल वर्स्टेन (व्याख्यात्मक समझ) के इस्तेमाल से संभव था।

बोध प्रश्न 2

1) इरविंग गोफमैन द्वारा प्रसिद्ध यह उपागम निम्नलिखित बातों पर आधारित है। जिस प्रकार पात्र हमारे सामने कार्य करते हैं और जिस प्रकार वे हमारे समक्ष कुछ दृश्य या चित्र पेश करते हैं, वैसे ही हम लोग भी बाहरी दुनिया के समक्ष अपने व्यक्तित्व के कुछ गुणों को प्रस्तुत करना पसंद करते हैं; और साथ ही हम उनमें से कुछ को छिपाना भी पसंद करते हैं।

2) जबकि प्रतीकात्मक अंतःक्रियात्मक उपागम सामान्य रूप से मीड से संबन्धित है। वह हर्बर्ट ब्लूमर ही थे जिन्होंने मीड के विचारों को आत्मसात किया और उन्हें अधिक व्यवस्थित समाजशास्त्रीय उपागम के रूप में विकसित किया।

अमूर्त सामाजिक संरचनाओं अथवा व्यक्तिगत व्यवहार के ठोस रूपों का सामना करने के स्थान पर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में वार्तालाप की प्रकृति, सामाजिक क्रिया और सामाजिक संबंधों के पैटर्न पर बल दिया जाता है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों के लिए व्याख्या विश्लेषण का प्रमुख उपकरण है।

3) दृश्य प्रपंच शास्त्र समाजशास्त्र काफी हद तक अल्फ्रेड शुट्ज के कार्यों से विकसित हो पाया जिन्हें द फेनोमेनोलॉजी ऑफ द सोशल वर्ल्ड (1967) के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। शुट्ज का यह सुझाव है कि क्रिया के दौरान हम समाज के बारे में धारणाओं को काम में लेते हैं कि यह किस प्रकार कार्य करता है और हम दूसरों की क्रिया की भविष्यवाणी करने के लिए कच्चे रास्ते में वर्स्टेन का इस्तेमाल करते हैं।

परिणामस्वरूप, हमारे कार्य 'सार्थक' होते हैं, क्योंकि हमारा कोई विशेष उद्देश्य या उद्देश्य नहीं होता है, परंतु दूसरा पात्र प्रतीकात्मक महत्व रखते हुए हमारी क्रिया की व्याख्या करते हैं।

5.9 संदर्भ

अब्राहम, एम फ्रांसिस (2015)। कनटेपोरारी सोशियोलॉजी : एन इंट्रोडकशन टु कांसेप्ट एंड थेओरीस (द्वितीय संस्करण)।नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

घ्रोन, रेमंड। (1967)। मेन करेंट्स इन सोशियोलॉजीकल थॉटस (खंड 2)। लंदनः पेंगुइन बुक्स।

बेंडिक्स, रेनहार्ड। (1960)। मैक्स वेबरः एन इंटीलेलेक्चुयल पोर्ट्रेट। न्यूयॉर्कः एंकर।

बिल्टन, टोनी, बोनट, केविन, जोन्स, फिलिप और अन्य. 1981. इंट्रोडकट्री सोशियोलॉजी। लंदनः द मैकमिलन प्रेस लिमिटेड।

ब्लूमर, हर्बर्ट। (1969)। सिंबोलीक इंट्रैक्शन : पेर्सपेक्टिव एंड मेथड।बर्कले, सी एः यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

गार्फिंकेल, हेरोल्ड। (1967)। स्टडीस इन एथनोमेथडोलोजी। न्यू जर्सीः प्रेंटिस हॉल।

गिडेंस एंथोनी। (2006)। सोशियोलॉजी (पांचवां संस्करण)। कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस।

मीड, जॉर्ज हर्बर्ट। (1972)। माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटीरू फ्रोम द स्टैंडपॉइंट ऑफ ए सोशल बिहेवीओरिस्ट। शिकागोः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस।

वालेस, रूथ ए और वुल्फ, एलिसन (1995)। कनटेपोरारी सोशियोलॉजीकल थियरि (चौथा संस्करण)। न्यू जसीर्रू प्रेंटिस हॉल।

वेबर, मैक्स (1964)। द थियरि ऑफ सोशल एंड इकनॉमिक ऑर्गनाइजेशन।न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस।

वेबर, मैक्स। (1968)। इकॉनमी एंड सोसाइटी : एन आउटलाइन ऑफ इंटरप्रेटिव सोशियोलॉजी।बर्कले, सी ए : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

इकाई 6 सांकेतिक अन्तःक्रियावाद*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 जॉर्ज हर्बर्ट मीडः मूल अवधारणा

6.3 प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद का उद्‌भव

6.4 विचार के अन्य संप्रदाय (स्कूल)

6.5 इरविंग गोफमैन और नाट्य कलात्मक दृष्टिकोण

6.6 हाल के अध्ययन

6.7 सारांश

6.8 संदर्भ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप समझ पाएंगेः

- इस इकाई में शिक्षार्थी को प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद के स्कूल से परिचित कराया जाएगा।
- 20वीं शताब्दी की शुरुआत से चला आ रहा किन्तु उत्तर आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता है;
- सिद्धान्त का शास्त्रीय आधार और प्रारम्भिक विचारक;
- इस संप्रदाय (स्कूल) के अंदर कई संप्रदायों के स्कूलों के विचार;
- इसके अत्यधिक हालिया अनुप्रयोग; तथा
- भविष्य में अनुसंधान के लिए इसकी प्रासंगिकता।

6.1 प्रस्तावना

20वीं शताब्दी की शुरुआत में समाजशास्त्र एक संरचनात्मक स्कूल की प्रधानता के साथ एक विषय के रूप में विकसित हुआ जिसमें सामाजिक व्यवहार को समग्र सामाजिक संरचना द्वारा निर्धारित नियमों और मानदंडों से मुक्त करने के रूप में देखा गया था। समाजशास्त्र, अपने उपविकासवादी और कार्यात्मक ढांचे के साथ इस प्रकार एक स्थूल (मैक्रो) परिप्रेक्ष्य के साथ एक विषय था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के व्यवहार मनोविज्ञान में अपनी जड़ों के साथ प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद इसके विपरीत एक सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य में शुरू हुआ। व्यक्तियों को समाज और उसके मानदंडों द्वारा विवश और ढाला हुआ देखने के बजाय, यह जांचना पसंद करता है कि व्यक्तिगत व्यवहार कैसे संबंध बनाते है और पारस्परिक और व्यक्तिगत संबंधों को पारस्परिक फैशन के रूप में देखने की भी जांच करता है। व्यक्तियों को महत्वपूर्ण रूप से विषयों और अभिकर्ताओं (एजेंटों) दोनों के रूप में देखा गया था और न कि सिर्फ वस्तुओं के रूप में। सामाजिक भूमिकाओं और प्रस्थितियों की

*यह इकाई प्रो. सुभद्रा चन्ना के द्वारा लिखी गई है।

अवधारणा आत्म और चेतना की अवधारणाओं द्वारा पूरक थी। सामाजिक व्यक्तित्व को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता था न कि केवल एक दिए गए रूप में। इस प्रकार प्रतीकात्मक संपर्कवाद के साथ, एक गतिशील और प्रक्रियात्मक कार्यप्रणाली को समाजशास्त्र के साथ-साथ सामाजिक मनोविज्ञान की एक धारणा में पेश किया गया था। दर्खाइम के विपरीत, जो केवल सामाजिक तथ्यों द्वारा सामाजिक तथ्यों की व्याख्या करना चाहते थे, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों ने व्यक्तिगत, स्व और समाज की अपनी अवधारणाओं में मनोवैज्ञानिक विचारों को प्रवेश करने की अनुमति दी। केवल इस बात पर चर्चा करने के बजाय कि समाज व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों ने यह जानने की कोशिश करने के लिए नीचे से काम किया कि कैसे व्यक्ति समाज का अर्थ बनाते हैं और वे जो करते हैं उसमें अर्थ ढूंढते हैं।

जॉर्ज हर्बर्ट मीड, बीसवीं सदी के शुरुआती विचारक, एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक, विचार के इस स्कूल के संस्थापक के रूप में माने जाते हैं, भले ही उन्होंने प्रतीकात्मक अंतःक्रिया शब्द को कभी नहीं प्रतिपादित किया।

6.2 जॉर्ज हर्बर्ट मीडः मूल अवधारणा

जॉर्ज हर्बर्ट मीड (जन्म 1863) एक प्रमुख अमेरिकी विचारक और दार्शनिक थे। उन्होंने मिशिगन विश्वविद्यालय में दर्शन और सामाजिक मनोविज्ञान पढ़ाया, और अपने जीवनकाल में कभी भी कुछ भी प्रकाशित नहीं किया। उनकी पुस्तक, माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटीः फ्रॉम ए सोशल बिहेवियरिस्ट के दृष्टिकोण को 1934 में उनके छात्रों द्वारा मरणोपरांत प्रकाशित किया गया था। इस पुस्तक ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के स्कूल की नींव रखी। स्व और चेतना के विकास के बारे में उनका सिद्धांत वह आधार है जिस पर अन्य सिद्धांतों का निर्माण किया गया था। उनके सिद्धांत का मूल आधार यह है कि 'स्व' स्वतः नहीं उभरता है, बल्कि दूसरों के साथ अन्तःक्रिया के माध्यम से उभरता है। हम दूसरों की नजरों से खुद को देखना सीखते हैं। या, हम कैसे अनुभव करते हैं कि हम काफी हद तक प्रभावित हैं कि हम अपने आसपास के लोगों से अपने बारे में क्या प्रतिक्रिया प्राप्त करते हैं। इस प्रकार सामाजिक संचार में दूसरों को इशारे करना शामिल होता है जिसे हम पहले स्वयं समझते हैं और फिर दूसरों को सामान्य रूप से समझे जाने वाले प्रतीकों के माध्यम से संचार करते हैं। दूसरे शब्दों में, एक हावभाव, भाषा के रूप में या अन्यथा इसे बनाने वाले व्यक्ति और इसे प्राप्त करने वाले व्यक्ति दोनों द्वारा समान रूप से समझा जाना चाहिएय और यह साझा समझ इसका अर्थ है। इस प्रकार हम साझा अर्थों की दुनिया में रहते हैं। अपने स्वयं के बारे में हमारी समझ, दूसरों से प्राप्त की गई प्रतिक्रिया और संचार के बारे में भी अनुकूलित होगी।

इन इशारों के सबसे सुसंगत महत्व के प्रतीक हैं जो उस महत्वपूर्ण भूमिका द्वारा महत्वपूर्ण बना दिए जाते हैं जो वे उस समाज में निभाते हैं जिससे कोई व्यक्ति संबंधित है। महत्वपूर्ण प्रतीकों को अक्सर दोहराया और सार्वभौमिक रूप से समझा जाता है। अभिकर्ताओं के समुदाय भी अर्थ के साझा परिसरों को बनाने के लिए एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं। इस प्रकार, एक ही समाज में भाग लेने वाले व्यक्तियों का एक समूह स्वयं या स्वयं के प्रति दूसरों के संयुक्त दृष्टिकोण को अपनाता है और इस प्रकार यह व्यक्ति के लिए समुदाय बन जाता है, जिसे मीड ने 'सामान्यीकृत दूसरों (अन्यों)' के रूप में संदर्भित किया है। इस प्रकार जब कोई व्यक्ति स्वयं के द्वारा होता है, तब भी वह ऐसा व्यवहार करेगा जैसे कि अन्य लोग मौजूद थे और व्यवहार सामान्यीकृत दूसरों की सार्वभौमिक पूर्व निर्धारित उपस्थिति से अनुकूलित होगा। जैसे अगर हम किसी पार्क में अकेले बैठे हैं या सड़क पर चल रहे हैं, तो

हम अभी भी उसके अनुसार ही व्यवहार करेंगे कि हमें बड़े पैमाने पर समाज की संयुक्त अपेक्षा के अनुरूप व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार जब हम एक ऐसे व्यक्ति को संबोधित कर रहे हैं जिसे हम भी नहीं जानते हैं, तो हमारी अपेक्षाएं इस सामान्यीकृत दूसरे के अनुसार आकार में होंगी, एक वह जो स्वयं के भीतर परिलक्षित होता है, तथा एक वह है जो हम खुद से अपेक्षा करते हैं। दूसरे शब्दों में, अधिकांश समय हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं जो कि हम उसी या समान परिस्थितियों में करेंगे।

इस प्रकार दो चरणों में आत्मबल विकसित होता है। पहले में, शिशु स्वयं के करीब लोगों की प्रतिक्रियाओं को आत्मसात करता है। इस प्रकार इसकी स्वयं की भावना विशिष्ट व्यक्तियों के विशेष दृष्टिकोण की व्यवस्था के द्वारा बनाई जाती है। लेकिन परिपक्वता के साथ बारीकियों ने सामान्यीकृत दूसरों को बनाने के लिए गठजोड़ किया, जो कि समग्र रूप से समुदाय है। हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि रूपात्मक (फॉर्मेटिव) अनुभव का केवल एक ही तरीका है। स्वयं और समाज का परस्पर संबंध पूरी तरह से एकतरफा या स्थिर नहीं है। अगर ऐसा होता तो समाज में रोबोट होते और इंसान नहीं।

इस प्रकार मीड 'I'(मै) और 'Me'(मुझे) के बीच अंतर लाते है। 'मैं 'अहंकार है, वह स्व है जो सचेत रूप से स्व है, जिसे हम एक व्यक्ति के रूप में अपना स्व मानते हैं। 'मी'(मुझ) वह स्वयं है जो समाज द्वारा परिलक्षित होता है। हमारे कार्यों में यदि हम 'मैं' के रूप में कार्य करते हैं तो हम वह कर रहे हैं जो समाज हमसे उम्मीद करता है। लेकिन एक समय में, 'हम' के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। 'मै' और, 'मुझे' के बीच बातचीत चल रही है, जब हम बातचीत करते हैं कि हम क्या करना चाहते हैं और हम इसे कैसे करते हैं। कई बार हम अनुपालन करते हैं, कई बार हम हेरफेर करते हैं और कई बार हम विद्रोह कर देते हैं। जब विद्रोह सामान्यीकृत दूसरों के सामूहिक रूप को लेता है, तो समाज खुद को बदल देता है और एक अलग तरह की बातचीत (अन्तः क्रिया) होती है।

6.3 प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद का उद्‌भव

मीड द्वारा दिए गए लीड के बाद शिकागो स्कूल के हर्बर्ट ब्लुमर द्वारा यह नाम प्रतिपादित किया गया। संक्षेप में, ब्लूमर (1969) ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के चार मूल सिद्धांतों की पहचान की। जो इस प्रकार हैं :

1) व्यक्तिगत क्रियाएं उन अर्थों के जवाब में होती हैं जो इशारों या वस्तुओं के लिए होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि लाल रंग का चिन्ह किसी विशेष स्थिति में खतरे का संकेत है, तो व्यक्ति तदनुसार कार्य करेंगे।

2) सभी अन्तः क्रिया पहले से परिभाषित और वर्गीकृत सामाजिक संदर्भों के भीतर होते हैं। दूसरे शब्दों में, सभी सामाजिक स्थितियों को पहले से ही एक साझा वर्गीकरण के संदर्भ में अर्थ के साथ प्रदान किया जाता है जो कि उस सामान्य सामाजिक स्थिति को साझा करने वाले सभी लोगों द्वारा अच्छी तरह से समझा जाता है। जैसे अगर किसी समाज में कुछ पवित्र है, तो सभी सदस्यों को पहले से ही इसके बारे में पता होगा और उसके अनुसार कार्य करेंगे।

3) ये अर्थ उन निरंतर अंतःक्रियाओं से निकलते हैं जो समाज में व्यक्ति एक दूसरे के साथ और बड़े पैमाने पर समाज के साथ होते हैं। उदाहरण के लिए एक बच्चा यह सीख सकता है कि मंदिर उसके माता-पिता से पवित्र है, लेकिन समाज के अन्य सदस्यों द्वारा उसके लिए इस विशेष अर्थ की पुष्टि की जाएगी ताकि बाद में यह अर्थ के सामान्यीकृत प्रणाली का एक हिस्सा बन जाए जो वह रखती है।

4) अर्थ स्थिर नहीं होते हैं, और नए अर्थ लगाए जा सकते हैं और पुराने अर्थ को दूसरों के साथ सामाजिक संपर्क के हिस्से के रूप में त्याग दिया जाता है। जैसे यदि कोई नई वस्तु उभरती है जिसे कुछ लोगों द्वारा पवित्र माना जाता है, तो समय के साथ अर्थ को स्वीकार किया जा सकता है या अधिक सदस्यों द्वारा अस्वीकार भी किया जा सकता है, और परिस्थितियों के आधार पर एक बदलाव हो सकता है या कलिका में फंस सकता है।

इस प्रकार मीड के बाद, ब्लूमर ने व्यक्तियों और समाज को एक दूसरे से उलझा हुआ माना, न कि एक दूसरे से अलग, एक ऐसा दृष्टिकोण जो कि पचास के दशक में प्रचलित नहीं था। ब्लुमर प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद को अन्तःक्रिया का विशेष रूप मानते हैं जो केवल मनुष्यों के बीच ही हो सकता है क्योंकि वे इस अर्थ के अनुसार अंतःक्रिया करते हैं जिसे कि वे वस्तुओं और इशारों (भाषा सहित) को प्रदान करते हैं। हालाँकि मीड ने न तो लिखित में कुछ लिखा था और न ही किसी विशेष पद्धति पर चर्चा की थी, ब्लुमर का मत था कि अर्थ केवल गुणात्मक कार्यप्रणाली के माध्यम से ही निकाले जा सकते हैं। वह सामाजिक व्यवहार के अध्ययन के लिए प्रत्यक्षवादी वैज्ञानिक तरीकों की प्रभावशीलता के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। इसके बजाय उन्होंने यह समझने के लिए अधिक व्यक्तिपरक उन्मुख तकनीक की वकालत की कि व्यक्तियों के सिर के अंदर क्या होता है और वे दूसरों के संबंध में अपने कार्यों को कैसे नियंत्रित करते हैं। इस प्रकार मानव व्यवहार के एक अन्वेषक को उस व्यवहार की गहराई से समझ प्राप्त करनी चाहिए और यह केवल गुणात्मक विधियों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, जिसे ब्लुमर ने 'सहानुभूति आत्मनिरीक्षण' के रूप में संदर्भित किया है, जिसके लिए एक विश्लेषक को खुद को उस जगह में रखने की आवश्यकता होती है दूसरे व्यक्ति को उसके व्यवहार को समझने के लिए। चूंकि इस तरह के तरीकों के लिए विद्वानों और अध्ययन के विषयों के बीच घनिष्ठ संबंध की आवश्यकता होती है, इसलिए निष्कर्ष हमेशा एक नहीं हो सकते क्योंकि वे एक वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। ब्ल्यूमर द्वारा संक्षेप में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के तीन मूल आधार दिए गए हैं-

1) सभी मनुष्य अन्य वस्तुओं (वस्तुओं या प्रतीकों) के लिए कार्य करते हैं, जिसका अर्थ उन वस्तुओं के अनुसार होता है। ये अर्थ संदर्भ के अनुसार अलग-अलग होते हैं, व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों।

2) ये अर्थ उन सामाजिक अंतःक्रियाओं से उत्पन्न होते हैं जो समाज के अन्य सदस्यों के साथ हुई हैं।

3) ये अर्थ एक व्याख्यात्मक तरीके से उत्पन्न होते हैं कि वे वस्तु से अंतर्निहित नहीं हैं बल्कि मानसिक प्रक्रिया का एक परिणाम हैं जिसके द्वारा वे उस महत्व को मानते हैं। उदाहरण के लिए, एक विशेष पेड़, पत्थर या इमारत उनकी मूल संरचना से परे को महत्वपूर्ण मान सकते हैं, जो किसी समुदाय के सदस्यों द्वारा उन्हें सौंपे गए ऐतिहासिक या पवित्र अर्थ के कारण हो सकते है।

इस प्रकार अंतःक्रिया नियतत्ववाद इस सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन मानव प्रभाव (एजेंसी) की धारणाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, किसी समुदाय के अधिकांश सदस्यों के लिए कुछ पवित्र हो सकता है लेकिन एक व्यक्ति अभी भी विद्रोही हो सकता है और महत्व को स्वीकार करने से इनकार कर सकता है। इसके अलावा, चूंकि यह एक व्याख्यात्मक प्रक्रिया है, इसलिए इस तरह के सभी महत्व काफी हद तक प्रकृति में प्रतीकात्मक हैं।

हालाँकि मीड के काम की अन्य व्याख्याएं थीं और उनमें शिकागो स्कूल की तुलना में विचार के विभिन्न स्कूल शामिल हैं जिन्हें ब्लूमर ने स्थापित किया था।

6.4 विचार के अन्य संप्रदाय (स्कूल)

विचार के दो अन्य महत्वपूर्ण स्कूल क्रमशः 'आयोवा स्कूल' और 'इंडियाना स्कूल' हैं, जिनका प्रतिनिधित्व क्रमशः मैनफोर्ड कुह्न और शेल्डन स्ट्राइकर द्वारा किया जाता है। दोनों ने ब्लूमर द्वारा प्रस्तावित पद्धति के लिए वैकल्पिक तरीके दिए। वे प्रत्यक्षवादी, परिमाणात्मक पद्धतियों की ओर जाने के इच्छुक थे। कुह्न ने प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद के लिए कठोर वैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग करने का प्रयास किया। आयोवा स्कूल के दृष्टिकोण से, व्यवहार को उद्देश्यपूर्ण समझा जाना है, और जबकि यह भविष्य के लिए अनुमानित है, यह पिछले अनुभवों द्वारा निर्देशित है। व्यवहार एक ऐसे तरीके (पैटर्न) का अनुसरण करता है जो इसे समय-सीमा के भीतर जानबूझ कर, प्रासंगिक बना देता है और आत्म-सुधार के लिए खुला होता है। विधिपूर्वक, व्यवहार का अध्ययन करने वाले विद्वानों को छोटे समूहों जैसे कि डायड्स और ट्रायड्स पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिन्हें अधिक सख्त टिप्पणियों के अधीन किया जा सकता है। उन्होंने प्राकृतिक सेटिंग में होने वाले नियंत्रित व्यवहार की तुलना करने के लिए प्रयोगशाला सेटिंग्स की भी वकालत की। वैज्ञानिक कठोरता को सुविधाजनक बनाने के लिए यह भी कहा गया था कि अध्ययन की जा रही तथ्यात्मक स्थिति का वर्णन करने के लिए एक अधिक सटीक वैज्ञानिक शब्दावली विकसित की जानी चाहिए। इस तरह की शब्दावली के विकास से वैज्ञानिक तुलना और परिणाम की अधिक एकरूपता में मदद मिलेगी। वे मीड द्वारा प्रस्तावित सिद्धांतों के अधिक व्यवस्थित परीक्षण के पक्ष में थे।

कुह्न ने 'ट्वेंटी स्टेटमेंट टेस्ट' (बीस कथन परीक्षण) विकसित किया। मीड ने प्रस्ताव किया था कि सामाजिक संपर्क के माध्यम से आत्म(स्व) उभरता है। इस परीक्षण में सूचक के जवाब के लिए बीस प्रश्न हैं, जो 'मैं कौन हूं' की मूल प्रश्न से संबंधित है। इन सवालों के जवाबों को फिर से कोडित किया जा सकता है और एक व्यवस्थित विश्लेषण से यह पता चल सकता है कि कोई व्यक्ति अपनी आत्म-अवधारणा और पहचान का आकलन कर रहा है या नहीं। चूँकि व्यक्तिगत रूप से सूचक द्वारा प्रतिक्रियाएँ दी जाती हैं, वे एक आत्म-मूल्यांकन से उपजी हैं जो प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी स्कूल के बुनियादी उपदेशों के अनुरूप है क्योंकि यह सिद्धांत में निहित विषयवस्तु को बनाए रखता है। व्यक्तिगत एजेंसी यह भी दिखाएगी कि एक व्यक्ति की एक समान प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ अधिक समान और संरचित प्रतिक्रियाएं भी आती हैं। इस स्कूल के शोधकर्ताओं ने प्रयोगशाला आधारित अनुसंधान से उत्पन्न अकड़ों (डेटा) का उपयोग काफी मात्रा में कार्य प्रस्तुत करने के लिए किया। उनके विरुद्ध निर्देशित मुख्य आलोचना उन प्रतिक्रियाओं पर थी जो स्वतंत्र प्रवाह के बजाय कृत्रिम रूप से संरचित की गई थीं। इसके अलावा पद्धति न्यूनीकृत और उपयोगी पाया गया।

कुह्न के छात्र, कार्ल काउच ने कुहन की पद्धति में सुधार किया, अंतःक्रिया आँकड़ों में गतिशीलता और समय की गहराई को जोड़ा, और इसे स्थान से परे विस्तारित किया। इस प्रकार प्रयोगशाला के स्थैतिक वातावरण के बजाय, डेटा को अन्तःक्रिया के विस्तारित अवलोकन से एकत्र किया गया था जो समय और स्थान दोनों में फैले हुए थे। कुछ लोग काउच युग को न्यू स्कूल ऑफ आयोवा के रूप में संदर्भित करते हैं।

इंडियाना विश्वविद्यालय के एक अन्य विद्वान, शेल्डन स्ट्राइकर ने प्रतीकात्मक अंतर्क्रियावादी विश्लेषण के लिए एक प्रत्यक्षवादी पद्धति को लागू करने में कुहन का पालन किया। उनका मानना था कि सामाजिक संरचनाओं ने समय के साथ एक सामाजिक संरचना बनाने के लिए स्थिर स्वरूप में सघन किया, जिसके विश्लेषण के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों

तरीकों को लागू किया जा सकता है। उनके अनुसार, जॉर्ज हर्बर्ट मीड के सिद्धांत को केवल एक संरचना के रूप में माना जाना चाहिए, जिसे उन्होंने प्रतीकात्मक संपर्कवाद का एक ठोस सिद्धांत माना। उन्होंने मीड द्वारा परीक्षण योग्य परिकल्पनाओं के रूप में सामने रखे गए प्रस्तावों का परीक्षण किया और उनकी मान्यताओं को संचालन चर के रूप में माना।

स्ट्राइकर का प्रमुख योगदान स्ट्रक्चरल रोल थ्योरी के रूप में सामाजिक भूमिकाओं की अवधारणा के विकास में था। यह मीड की भूमिका के प्रस्ताव पर आधारित था या एक सामाजिक अन्तःक्रियात्मक स्थिति में भूमिका की धारणा थी। स्ट्राइकर के अनुसार, लोग प्रतीकात्मक संकेतों का उपयोग करके अन्य अभिकर्ताओं से निकलने वाली सामाजिक अंतःक्रियाओं में भूमिकाएं ग्रहण करते हैं जो उनके लिए उनके कार्यों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार, किसी अन्य व्यक्ति के साथ अंतःक्रिया करते समय, एक व्यक्ति को पारस्परिक क्रियाओं की कुछ अपेक्षाएं होती हैं जो दूसरों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हैं। ये पिछले अनुभवों के साथ-साथ सामाजिक रूप से प्रदान किए गए मानदंडों से निर्मित होते हैं जो अभिकर्ताओं द्वारा प्रदर्शित विशेष स्थितियों से जुड़े होते हैं। इस प्रकार विशेष भूमिकाओं से जुड़ी भूमिकाओं से भविष्य के कार्यों की भविष्यवाणी की जा सकती है, हालांकि सामाजिक परिवर्तन की स्थिति में, यह नई उम्मीदों और दृष्टिकोण को जन्म देगा। इस प्रकार भले ही मानदंड पूरी तरह से नहीं बदलते हों, भूमिका प्रदर्शन की प्रकृति भिन्न हो सकती है। समाजीकरण की प्रक्रिया अधिकांश भूमिका अपेक्षाओं का आधार है जो दोनों द्वारा सूचित की जाती हैं और जो सामाजिक मानदंडों को बनाए रखने में मदद करती हैं, जिससे संरचनात्मक एकता बनती है। इस प्रकार व्यक्ति यह समझते हैं कि उन्हें उस विशेष स्थिति में अपनी सामाजिक स्थिति के बारे में अपनी समझ के अनुसार कैसे अंतःक्रिया करनी चाहिए और पारस्परिक रूप से बदलना चाहिए। आमतौर पर समझा जाने वाला एक आदर्श पैटर्न साझा उम्मीदों को जन्म देता है जो दोनों अभिकर्ताओं को निर्देशित करता है और साथ ही उन्हें उन भूमिकाओं को फिर से बनाता है जिनसे उन्हें निभाने की उम्मीद होती है। यह रिश्ता जो व्यक्तियों का समाज के साथ है। व्यक्ति इस प्रकार हर समय सचेत निर्णय लेने के बिना दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करते हैं। ये क्रियायें जहाँ तक वे जानी-पहचानी और परिचित भूमिका निभाने वाली स्थितियों पर लागू होती हैं, जैसे कि शिक्षक और शिक्षार्थी, माँ और बच्चे वगैरह। समय के साथ ये आंतरिक हो जाते हैं क्योंकि सामाजिक व्यक्ति परिपक्व वयस्कों में विकसित होते हैं और अंत में उनकी पहचान बन जाते हैं, उदाहरण के लिए लिंग, वर्ग, व्यवसाय, परिवार आदि की पहचान। इस प्रकार स्ट्राइकर ने निम्न-उच्च को जोड़ दिया, या सामाजिक संरचनावादियों के स्थूल समाजशास्त्र के साथ प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों द्वारा प्रदान किये गये सूक्ष्म समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को जोड़ा। सामाजिक संरचनाओं से जुड़े सामाजिक मानदंडों के महत्व पर जोर देकर, जो सामाजिक संरचना बनाते हैं, उन्होंने प्रदर्शित किया कि कैसे सामाजिक संरचना द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को सशर्त रूप से यहां तक कि सामूहिक रूप से वे इसे पुनःउत्पादित करने में मदद करते हैं।

6.5 इरविंग गोफमैन और नाट्यकलात्मक दृष्टिकोण

नाट्यकलात्मक दृष्टिकोण के रूप में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के लिए गोफमैन के योगदान को, जहां वह सामाजिक जीवन को एक नाटक के रूप में और सामाजिक अभिनेताओं द्वारा प्रदर्शन के रूप में सामाजिक अंतःक्रिया को देखते हैं, सभी लोग अपनी भूमिका निभा रहे हैं; जो बेहद लोकप्रिय रहा है। उनकी पुस्तकें विशेष रूप से सामाजिक संगठन और सामाजिक समूहों के आंतरिक कामकाज के रूप में समाज के विश्लेषण में एक नया दृष्टिकोण लाने में प्रभावशाली रही हैं।

उनके अनुसार, कोई भी सामाजिक संपर्क पूरी तरह से सहज नहीं है, क्योंकि वे सभी इसमें संलग्न व्यक्तियों द्वारा स्थिति की एक पूर्व समझ पैदा करते हैं और जो अंतःक्रिया की स्थिति में लाते हैं कि वे कैसे स्थिति और उनके हिस्से की कल्पना करते हैं, जैसे कि साथ ही वे दूसरों से किस तरह का व्यवहार करते हैं, इसकी एक अवधारणा है। इस संदर्भ में प्रत्येक व्यक्ति की एक आत्म-पहचान या आत्म-धारणा भी है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक स्थिति में अंतःक्रिया करने वाले व्यक्तियों में एक 'काम करने वाली सहमति' होती है, जहां वे अपने स्वयं के उस पहलू को प्रस्तुत करते हैं जो परिस्थिति के अनुसार सबसे अच्छा काम करता है। इस प्रकार यह माना जाता है कि एक ही सामाजिक व्यक्ति के कई पहलू होते हैं, प्रत्येक की भूमिका कई भूमिकाओं में होती है जो आमतौर पर समाज में लोग निभाते हैं। एक विशेष समाज में रहने के अपने अनुभव के माध्यम से, हम किसी भी स्थिति में जिस तरह की भूमिका निभाने की उम्मीद करते हैं, उसी के साथ किसी अन्य स्थिति में अपनी भूमिका निभाने की उम्मीद के साथ न्याय करने में सक्षम हैं। इस प्रकार, एक व्यक्ति के पास समाजीकरण, जीवन के अनुभव और साथी प्रतिभागियों के बारे में किसी भी अन्य माध्यम से आरंभिक जानकारी एक सफल सहभागिता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हम में से प्रत्येक एक समाज के सदस्यों के रूप में परिचित और अज्ञात की अवधारणाओं से परिचित है। हम हमेशा अज्ञात के बारे में ज्ञात और पूर्वानुमेय स्थिति और बेचैन से सहज होते हैं, जैसे पहली बार किसी अजीब जगह पर जाना या नए लोगों से मिलना जिनके बारे में हम कम जानते हैं।

किसी भी स्थिति में, हमेशा स्व-धारणा की भूमिका होती है और हर एक को यह अपेक्षा होती है कि वह जो भी महसूस करता है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाए, क्योंकि वे इस बात के हकदार हैं कि उम्र, लिंग, वर्ग, शैक्षणिक योग्यता जैसे उनके स्व-कथित चरित्र क्या हो सकते हैं या कोई अन्य। किसी भी मानदंड के संदर्भ में स्थिति की किसी भी गलत व्याख्या पर चर्चा की जा सकती है। उदाहरण के लिए, कोई इस बारे में गलत हो सकता है कि जिस भूमिका के लिए उन्होंने स्वयं के लिए स्थापित किया था, उसके संदर्भ में वे दूसरों से किस तरह का व्यवहार या गलत व्यवहार करने की अपेक्षा करते थे या वे दूसरों के द्वारा किए गए व्यवहार से निराश या आहत महसूस कर सकते हैं। किसी भी पक्ष की अपेक्षाओं में कोई भी खराबी एक असंतुष्ट या विफल अंतःक्रिया का कारण बन सकती है।

सामाजिक संपर्क में संभावित अलगाव से बचाने के लिए, दो प्रकार के तंत्र माने जाते हैं। ये रक्षात्मक प्रथाएं और सुरक्षात्मक प्रथाएं या व्यवहार कुशलता हैं। साथ में वे एक व्यक्ति द्वारा दूसरों के सामने बनाई गई धारणा को प्रबंधित करने के लिए कार्यरत हैं। उदाहरण के लिए, कई सामाजिक समारोहों की कहानियों में मिथकों या आख्यानों में अनैतिक घटनाओं के बारे में बताया जाता है जो हो सकता है या ऐसा हो सकता है, जो कि कैथार्सिस (विरेचन) की भावना पैदा कर सकता है। शर्मनाक स्थितियों में पकड़े गए व्यक्तियों को यह आश्वासन मिल सकता है कि वे ऐसी स्थिति का सामना करने वाले अकेले नहीं हैं। टैक्ट अक्सर एक सफल परिचारिका या राजनयिक होने की योग्यता है, जब किसी के पास एक शर्मनाक फिसलन या अशुद्ध पेस के लिए कवर करने की त्वरित समझ होती है।

गोफमैन (1956) ने कुछ शब्दों को परिभाषित किया है जो वह सामाजिक जीवन के अपने वर्णन में एक नाटक के रूप में उपयोग करते हैं। वह एक अंतःक्रिया या सामना को परिभाषित करता है, जो किसी भी एक अवसर पर तब होता है जब व्यक्तियों का एक सेट एक दूसरे की निरंतर उपस्थिति में होता है। एक 'प्रदर्शन' को किसी दिए गए प्रतिभागी की सभी गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो किसी भी अन्य प्रतिभागियों को

किसी भी तरह से प्रभावित करने का कार्य करता है। एक समूह में, यदि हम एक व्यक्ति को अपने स्थान के रूप में लेते हैं, तो दूसरे लोग दर्शक, पर्यवेक्षक या सह-प्रतिभागी बन जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम कक्षा में व्याख्यान देने वाले शिक्षक पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, तो छात्रों को एक दर्शक के रूप में देखा जा सकता है। यदि हम ऑपरेशन करने वाले किसी विशेष सर्जन पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो अन्य डॉक्टर, नर्स और सहायक सह-सहभागी बन जाते हैं।

जब कोई प्रदर्शन बार-बार पूर्व-स्थापित स्वरूप का अनुसरण करता है तो उसे दिनचर्या कहा जा सकता है या जब किसी व्यक्ति के कार्यों का जिक्र किया जाता है तो उसे हिस्सा कहा जा सकता है। ड्यूटी पर एक पुलिसकर्मी दिनचर्या का पालन करता है और एक रैली को संबोधित करने वाले एक राजनेता एक भूमिका निभाता है। चूंकि ज्यादातर लोग कई भूमिकाएँ निभाते हैं, इसलिए वे अलग-अलग मौकों पर अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। एक राजनेता एक पति और पिता का हिस्सा भी निभाता है जब वह अपने परिवार के साथ होता है या दोस्त का हिस्सा तब होता है जब वह दोस्त के साथ होता है।

सामाजिक भूमिका में अधिकारों और कर्तव्यों की एक श्रृंखला भी जुड़ी हुई है। हालाँकि भूमिका निभाने या कर्तव्यों का निर्वहन करने के दौरान, एक व्यक्ति उस डिग्री में भिन्न हो सकता है जिसमें वह पूरी तरह से वैचारिक रूप से या तर्कसंगत रूप से आश्वस्त हो सकता है कि वे उस हिस्से का निर्वहन कर रहे हैं। जब कोई व्यक्ति इसके बारे में आश्वस्त हुए बिना एक भूमिका निभाता है, जैसे एक राजनेता बिना अर्थ के शांति के बारे में बात कर सकता है, तो व्यक्ति को एक सनकी कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति अपनी भूमिका निभाने के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हो जाता है, जैसे कि एक माँ अपने बच्चे की देखभाल करती है, तो वह व्यक्ति ईमानदार होता है। कई अन्य भूमिका निभाने वाले हिस्से बीच में कहीं गिर सकते हैं।

अधिकांश सामाजिक व्यक्ति इस अवसर के लिए उपयुक्त एक अभिव्यंजक उपकरण लगाते हैं जिसे 'फ्रंट' कहा जाता है। इसका मतलब यह भी है कि अधिकांश लोग भूमिका निभाते समय अपनी कुछ वास्तविक भावनाओं या विचारों या मन की अवस्थाओं को छिपा लेते हैं। उदाहरण के लिए, एक महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने के दौरान, एक कार्यकारी इस तथ्य को छिपा सकता है कि वह एक दोस्त को खोने से दुखी है, जबकि एक राजनयिक महत्वपूर्ण कार्य का निर्वहन करते वक्त बीमार होने की भावनाओं को दबा सकता है। सभी सामाजिक इंटरैक्शन होते हैं और कुछ उचित रूप से परिभाषित सेटिंग के भीतर होते हैं। उदाहरण के लिए शोक जताना है तो माहौल उपयुक्त जन्मदिन की पार्टी से काफी अलग होगा। इसी तरह एक व्यक्तिगत व्यवहार भी है, जैसे कि पोशाक, उपस्थिति, चेहरे की अभिव्यक्ति, शिष्टाचार और शारीरिक प्रभाव के अन्य पहलू जो किसी सामाजिक व्यवहार में किसी व्यक्ति की उपस्थिति से उत्पन्न होते हैं। एक दोस्त से डेटिंग करते समय एक नौकरी के साक्षात्कार के लिए एक बहुत ही अलग उपस्थिति या व्यक्तिगत व्यवहार रखना पड़ता है। किसी भी सफल सामाजिक संपर्क के लिए, सेटिंग, उपस्थिति और तरीके के बीच सामंजस्य होना चाहिए। किसी भी समाज में, पहले से 'व्यवहार' प्रदत्त अवस्थिति के लिए उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी को शादी करनी है, तो वे पहले से ही मौजूद भूमिका निर्वहन कर रहे होते हैं, या एक कार्यालय में जा रहा है, एक नौकरी के विवरण के अनुसार मानक 'व्यवहार' उपलब्ध होते हैं।

आदर्श प्रदर्शन आमतौर पर उन लोगों द्वारा किया जाता है जो सामाजिक सीढ़ी पर चढ़ना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, एक पदानुक्रमित समाज में, ऊपरी तंत्र के तरीके और मोर्चों

को पदानुक्रम में हासिल करने के लिए निचले स्तर द्वारा अनुकरण किया जा सकता है, और वे चीजों को अच्छी तरह से करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करते हैं। सोपान के शीर्ष पर एक उद्योगपति लापरवाही से कार्यालय के लिए पोशाक डाल सकता है, लेकिन एक अधीनता प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति को प्रभावशाली ढंग से पोशाक डालने के लिए दर्द होगा।

जब कोई टीम प्रयास शामिल होता है, तो तैयार उत्पाद को प्रोजेक्ट करने और उन प्रयासों को छिपाने की प्रवृत्ति होती है जो उदाहरण के लिए प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरण के लिए, एक टेलीविजन शो देखते समय, दर्शकों को कभी पता नहीं चलता है कि इसके निर्माण के दौरान क्या हादसे हुए हैं। एक परिचारक पार्टी से बाहर निकलने वाली परिचारिका अपने संगठन में हुई सभी गड़बड़ियों को छिपाती है। गोफमैन ने सभी रणनीतियों और 'फ्रंट स्टेज' और 'बैक स्टेज' प्रदर्शनों के साथ आने के लिए कई संगठनों और सामाजिक स्थितियों का अध्ययन किया था जो रोजमर्रा के सामाजिक संपर्क में आते हैं। उन्होंने यह दिखाने के लिए सांस्कृतिक रूप से अपने शोध को फैलाया था कि प्रदर्शन स्थानीय मानदंडों और मूल्यों के अनुसार भिन्न हो सकते हैं लेकिन सामाजिक जीवन का अनिवार्य पहलू है, कि हम में से अधिकांश हर समय एक प्रदर्शन डाल रहे हैं और हमारे बीच एक महत्वपूर्ण विसंगति है 'सभी- भी- मानव-स्वयं' और हमारी सामाजिकता, सभी समाजों के लिए सही है। प्रभाव प्रबंधन सभी सामाजिक संपर्कों का एक प्रमुख पहलू बना हुआ है, चाहे वह एक आदिवासी समाज में शामन हो या शहरी समाज में उच्च प्रदर्शन वाला व्यवसाय या परिवार में पत्नी या कक्षा में एक विद्यार्थी हो।

इस प्रकार गोफमैन का सिद्धांत सामाजिक अनुसंधान के तीन अलग-अलग क्षेत्रों से प्राप्त अवधारणाओं और निष्कर्षों को एक ढांचे में लाता है; व्यक्तिगत व्यक्तित्व, सामाजिक संपर्क और समाज। इस प्रकार एक सामाजिक संपर्क की विफलता सभी तीन आयामों को प्रभावित करती है।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद ने अनुसंधान के एक विस्तृत क्षेत्र में प्रासंगिकता पाई है और अगले भाग में हम उनमें से कुछ के बारे में पढ़ेंगे।

सिंबोलिक इंटरेक्शनिज्म मेथड्स के साथ किए गए महत्वपूर्ण शोध

बेकर (1953) का एक शास्त्रीय अध्ययन मारिजुआना उपयोगकर्ताओं पर है, जहां वह दर्शाता है कि दवाओं के उपयोगकर्ताओं द्वारा 'भारी' होने की भावना दवा के शारीरिक प्रभावों पर नहीं बल्कि दवा उपयोगकर्ता के अन्य लोगों के साथ बातचीत पर निर्भर है।। ड्रग उपयोगकर्ताओं को केवल तभी उच्च महसूस होता है, जब वे दूसरों की उपस्थिति में होते हैं, जो उस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद करते हैं। इस प्रकार लक्षण उद्देश्यपूर्ण वास्तविकता की तुलना में एक प्रतीकात्मक निर्माण का अधिक हैं। एक अत्यधिक सामान्य संदर्भ में, बेकर के अध्ययन से पता चलता है कि अन्य लोगों के साथ अंतःक्रिया द्वारा भूमिका व्यवहार का अधिग्रहण और अनुकूलन किया जाता है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में अन्य शास्त्रीय अध्ययन जो आज भी पहचाने जाते हैं, वो हैं ग्लेसर और स्ट्रॉस (1964), जिन्होंने संकेत दिया कि जागरूकता या सामाजिक परिस्थितियों में जागरूकता की कमी है। जो लोग अनजान हैं या जिनको जानकारी का अभाव है, वे जागरूक लोगों की तुलना में एक अलग तरीके से अंतःक्रिया करेंगे। उन्होंने उदाहरण दिया है कि अस्पताल में रहने वाले बीमार रोगियों को उनके उत्साह को बनाए रखने और उन्हें अपने जीवन के अंतिम दिनों को बेहतर तरीके से गुजारने का मौका देने के लिए चिकित्सा पेशेवरों द्वारा उनकी स्थिति के बारे में जानकारी नहीं दी जाती थी। स्टाइलकर (1957) ने पारिवारिक भूमिका प्रदर्शनों

का अध्ययन करने के लिए प्रतीकात्मक अंतःक्रिया का इस्तेमाल किया था। रोसेनग्रेन (1961) ने स्वयं-चित्रों को बदलते हुए अध्ययन किया कि कोई व्यक्ति स्वयं को कैसे समझता है, दूसरे आपके साथ अंतःक्रिया में कैसा अनुभव करते हैं, यह इससे अनुकूलित होता है। यह एक प्रारम्भिक अवलोकन था, जिसमें जॉर्ज हर्बर्ट मीड, और रोसेनबर्ग ने युवा लड़कों के अपने अध्ययन में संस्थागत किया था जो यह दर्शाया कि कैसे इस परिकल्पना का परीक्षण ऐसी स्थिति में किया जाय जो प्रयोगशाला के निकट हो किन्तु उसी वक्त एक प्राकृतिक सेटिंग में एक सामाजिक संस्था हो। यह अध्ययन उस तरह के शोध के तरीकों का भी संकेतक था, जिसका उपयोग नियंत्रित और परीक्षण योग्य सेटिंग में प्रतीकात्मक अंतःक्रिया का अध्ययन करने के लिए किया जा सके।

इन शास्त्रीय कार्यों से प्रेरित होकर, इस सिद्धांत को आधुनिक काल के बाद के विद्वानों द्वारा भी लागू किया गया है।

6.6 हाल के अध्ययन

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के उपयोग के साथ पहचान अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है, जहां अध्ययन या भूमिका और भूमिका प्रदर्शन को पहचान की धारणाओं से जोड़ा गया है। दूसरे शब्दों में, लोग कैसा प्रदर्शन करते हैं, यह इस बात से संबंधित है कि वे खुद को किस तरह से देखते हैं। इस प्रकार भूमिकाओं को दूसरों की धारणा द्वारा अनुकूलित किया जाता है जिनके प्रति धारणा निर्देशित होती है। उदाहरण के लिए, एक उच्च उम्मीद किसी व्यक्ति पर साथियों द्वारा की जाती है, तो वह व्यक्ति उस उम्मीद पर खरा उतरने की कोशिश करेगा। जैसा कि टर्नर (1962) द्वारा प्रदर्शित किया गया था, भूमिका अपेक्षाएँ सामाजिक संरचना में निहित होती हैं जो अपेक्षा और प्रतिमान के माध्यम से सामाजिक स्थिति से जुड़ी होती हैं। इस प्रकार एक माँ अपने बच्चे की बहुत अच्छी देखभाल करेगी, न केवल इसलिए कि वह चाहती है बल्कि इसलिए भी क्योंकि समाज उससे अपेक्षा करता है।

एक अन्य क्षेत्र जिसमें बड़ी संख्या में कार्य दिखाई देते हैं, वह प्रभावित नियंत्रण के क्षेत्र में है। ये अध्ययन भावनाओं, पहचान और व्यवहार के बीच की कड़ी को दर्शाते हैं। जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप से जागरूक होता है, तो निराशा या बदनामी के माध्यम से, कि उसकी या उसकी भूमिका के प्रदर्शन ने सांस्कृतिक अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया है या कि वे इसी तरह की भावनाओं के माध्यम से महसूस करते हैं कि दूसरों ने उन्हें पूरा नहीं किया है जो उनसे अपेक्षित था। ऐसी दोनों स्थितियों में स्वयं और दूसरों का अहसास होता है। जब चीजें अपेक्षाओं के अनुसार नहीं चलती हैं, तो एक की पहचान में बदलाव लाकर और दूसरों के प्रति भूमिका प्रदर्शन और अपेक्षाओं में बदलाव लाकर, बहाली की दिशा में प्रयास किया जाता है। सामाजिक दुनिया के निर्माण के ऐसे पुनर्मूल्यांकन के अध्ययन चल रहे हैं। बहुत से काम अभी भी सामाजिक स्थितियों में प्रेरणा, भावनाओं और प्रदर्शन के लिए पहचान और आत्म-धारणाओं को जोड़ते हैं। इस प्रकार, एक प्रमुख पहचान, चाहे वह धर्म, परोपकार या राजनीतिक हो, एक व्यक्ति के व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करता है, उन क्षेत्रों में जो सीधे इन आयामों से जुड़ा नहीं है। इस प्रकार तथ्य यह है कि एक राइट विंग या लेफ्ट विंग पारस्परिक संबंधों को प्रभावित करेगा, एक वातावरण के प्रति व्यवहार और सामान्य रूप से समाज के प्रति।

लिंग और यौनिकता निर्माणों को समझने में प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद भी उपयोगी पाया गया है। वेस्ट और जिमरमैन (1987) के अब के क्लासिक काम, 'डूइंग जेंडर' से पता चलता

है कि किसी व्यक्ति के समाजीकरण और समाज में दूसरों के साथ अंतःक्रिया करने के तरीके से पुरुषत्व और स्त्रीत्व की अवधारणाओं का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार एक आत्म-छवि एक बड़े पैमाने पर सामाजिक निर्मिति है, जिसका जीव विज्ञान में बहुत कम आधार है। उन्होंने सभी प्रकार के सामाजिक इंटरैक्शन में एक लिंग पहचान को भी महत्व दिया, क्योंकि लोगों के प्रदर्शन का आकलन या भूमिका अपेक्षाओं के संदर्भ में उनके लिंग पर लगभग हमेशा निर्णय दिया जाता है। सामाजिक संसाधन और आर्थिक, राजनीतिक और संगठनात्मक शक्ति आवंटन लगभग हमेशा लिंग पहचानों द्वारा अनुकूलित होते हैं जो पितृसत्ता का आधार बनते हैं।

एप्लाइड शोध भी प्रतीकात्मक अंतःक्रिया के तरीकों का उपयोग करता है कि कैसे लोग, नीतियों को प्राप्त करने और कार्यान्वयन के दोनों स्तरों पर मूल्यांकन और उनकी भूमिका के बारे में अपनी अपेक्षाओं और नैतिक निर्माणों के अनुसार भी उनका मूल्यांकन करते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) परिभाषित करें कि आप सामाजिक संपर्क और सामान्यीकृत अन्य जैसी अवधारणाओं को कैसे समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

2) किसके कार्यों से प्रतीकात्मक अंतःक्रिया का मूल आधार विकसित हुआ है? चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

3) कम से कम दो स्कूलों के सांकेतिक अंतःक्रियावाद का नाम बताएं और ये सिद्धांत एक दूसरे से कैसे भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) आप नाटकीय दृष्टिकोण से क्या समझते हैं। इसे किसने तैयार किया?

.....

.....

.....

.....

.....

5) यह बताएं कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण का उपयोग करके लिंग की पहचान कैसे बनाई जाती है?

.....

.....

.....

.....

6) आप सामाजिक अंतःक्रिया में 'बैक स्टेज' और 'फ्रंट स्टेज' के प्रदर्शन से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

7) सामाजिक भूमिका से आप क्या समझते हैं और यह कैसे निभाया जाता है?

.....

.....

.....

.....

8) क्या हम प्रतीकात्मक अंतःक्रिया के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन कर सकते हैं? चर्चा करें ?

.....

.....

.....

.....

9) अनुप्रयुक्त शोध में प्रतीकात्मक अंतःक्रियात्मकता का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

10) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सूक्ष्म (मैक्रो) स्तर के सामाजिक सिद्धांतों जैसे संरचनावाद और प्रकार्यवाद से अलग कैसे है? क्या ये दृष्टिकोण संयुक्त हो सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

6.7 सारांश

अंत में संक्षेप करने के लिए, इस पाठ में आपने एक महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रयुक्त सामाजिक सिद्धांत और कार्यप्रणाली के बारे में सीखा है। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो बीसवीं सदी की शुरुआत में आया था लेकिन आज भी यह सबसे महत्वपूर्ण है और इसने सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह के महत्वपूर्ण अनुसंधानों को जन्म दिया है। यह मूल रूप से पारस्परिक संपर्क के सूक्ष्म स्तर पर समाज को व्यक्ति से जोड़ता है और भूमिका निभाने और मानदंडों के उपयोग के माध्यम से सामाजिक स्थितियों को वैधता प्रदान करता है और वृहत सामाजिक संरचना को भी वैधता प्रदान करता है। यह मनोवैज्ञानिक आत्म को सामाजिक स्व से जोड़ता है, यह दर्शाता है कि किसी व्यक्ति के स्वयं के बारे में अवधारणाएं किस तरह से अनुकूलित होती हैं कि दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं और आपके बारे में उनसे क्या अपेक्षाएं हैं। चूंकि मानव समाज में सभी संचार भाषा सहित प्रतीकों के माध्यम से होते हैं, इस सिद्धांत को प्रतीकात्मक अंतःक्रिया के रूप में नाम मिला।

हमने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के विभिन्न महत्वपूर्ण सिद्धांतों और अनुप्रयोगों के बारे में भी सीखा है और मुख्य रूप से पहचान के अध्ययन और नीति अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में समकालीन सामाजिक सिद्धांत में इसकी प्रासंगिकता के बारे में भी जाना है।

6.8 संदर्भ

ब्लूमर, एच (1969). सिंबोलीक इंटरेक्शनिज्मः पर्सपेक्टिव एंड मेथड. बरकलेः यूनिवरसिटि ऑफ कैलिफोर्निया प्रैस.

मिड,जार्जहर्बर्ट(1934).माइंड ,सेल्फ एंड सोसाइटी फ्रम द स्टैंडप्वाइंट ऑफ सोसल बिहाइवियरिस्ट, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

स्ट्राइकर,शेल्डन. (1980). सिंबोलीक इंटरेक्शनिज्मः ए सोसल स्ट्रक्चर विजन, मेनलों पार्कः बेंजमीन्स कमींग्स.

बेकर, एच. एस (1953). "बीकमिंग ए मेरीजुयाना यूजर", अमेरिकन जर्नल ऑफ सोसिओलोजीय 59(3)235-42.

बेकर,एच . एस एंड एम.एम.मैकल (1993). सिंबोलीक इतरेक्शनिज्म एंड कल्चरल स्टडीज, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

कार्टर,मिशेल जे एंड सेलेन फुलर. (2015). "सिंबोलीक इंटरेक्शनिज्म" सोसिओपेडिया इसा,1-17.

कॉलिन्स, रंदल (एड). (1994). फोर सोसिओलोजिकल ट्रेडीशन्स, न्यू यॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस .

कलिन्स, रंदल. (2004). इंटरेक्शन रिचुअल चौन्स, प्रिंसटान : प्रिंसटान यूनिवर्सिटी प्रेस.

गोफमैन , एरविन (1959). द प्रजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवेरीडे लाइफ ,न्यू यॉर्क : डबल डे.

गोफमैन, एरविन (1967). इंटरेक्शन रिचुअल , शिकागो : अलडीन.

कुन , मैनफोर्ड एच. (1964). "मेजर ट्रेंड्स इन सिंबोलीक इंटरेक्शन थियरी इन द पास्ट

ट्वेंटी फाइव इयर्स",द सो सीओलोजिकल क्वार्टर्ली, 5(1): 61-84.

रोसेंग्रेन डब्लू आर. (1961). 'द सेल्फ इन द सोसली डिस्टर्बड',अमेरिकन जर्नल ऑफ सोसिओलोजी 6(5): 454-62.

स्ट्राइकर,शेल्डन. (1980). सिंबोलीक इंटरेक्शनिज्म रूए सोसल स्ट्रक्चरल वर्जन,मेनलों पार्कः बेंजामिन कमीन्स

स्ट्राइइकर, शेल्डन. (2008). "फ्राम मिड टु ए स्ट्रक्चरल सिंबोलीक इंटरेक्शनिज्म एंड बियाण्ड ",एनुअल रिव्यू ऑफ सोसिओलोजी 16: 87-110

व्हाइट सी एंड जीमरमैन डी. एच (1987). डूइंग जेंडरः डूइंग डिफरेंस, न्यू यॉर्क, रुतलेज.